

Millions Missing?

millionsmissingguide.org/hi/

1. यीशु, उद्धार और आशा के बारे में बाइबल के उत्तर
2. Millions Missing?
3. सृष्टि से क्रूस तक की कहानी
4. अगर परमेश्वर इतना प्रेमी है, तो वह दुनिया में बुराई क्यों होने देता है?
5. यीशु मसीह कौन हैं?
6. पाप क्या है?
7. मुझे यीशु की ज़रूरत क्यों है?
8. यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पाना — उद्धार कैसे पाएँ
9. प्रार्थना कैसे करें
10. विश्वास क्या है?
11. मसीही बनने के बाद क्या होता है?
12. शैतान और परमेश्वर के हथियारों को समझना
13. अगर लाखों लोग गायब हो गए हैं — तो क्या हुआ होगा?
14. बाइबल के अनुसार स्वर्ग कैसा है?
15. बाइबल की भविष्यवाणी — प्रकाशितवाक्य और आगे क्या होगा
16. डर, चिंता और हिम्मत के लिए बाइबल के वचन
17. जब आप डरे हों, किसी को खोने के बाद दुखी हों, या अकेले हों
18. जीवित रहना और आपातकालीन योजना
19. आपातकालीन योजना और जीवित रहना

आपके लिए एक पत्र और प्रार्थना

प्रिय मित्र,

अगर आप यह पढ़ रहे हैं, तो मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि यह वेबसाइट आपके लिए प्रेम से बनाई गई है। हो सकता है मैं आपका नाम या आपकी कहानी कभी न जान पाऊँ, पर मैंने आपके लिए प्रार्थना की है।

हो सकता है आप डरे हुए, उलझन में, आहत हों, या उत्तर ढूँढ़ रहे हों। हो सकता है आप परमेश्वर या बाइबल के बारे में ज़्यादा न जानते हों। कोई बात नहीं। आपको आज सब कुछ समझना ज़रूरी नहीं है। आपको सिद्ध होना ज़रूरी नहीं है। आपको यह दिखावा करना ज़रूरी नहीं कि आप डरे हुए नहीं हैं।

मेरी प्रार्थना है कि ये पत्र आपको सत्य, आशा और शांति पाने में मदद करें। सबसे बढ़कर, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वे आपको यीशु को जानने में मदद करें। वह आपको जानता है। वह देखता है कि आप किस दौर से गुज़र रहे हैं। वह आपसे प्रेम करता है। आप जहाँ हैं वहीं उससे बात कर सकते हैं।

कृपया अपना समय लीजिए। पढ़िए। सवाल पूछिए। जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में सोचिए। परमेश्वर आपको अपने ऊपर विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं करता। चुनाव आपका है। मेरी बस यही आशा है कि आप यीशु को एक मौका दें और खुद जानें कि वह कौन है।

आपके लिए मेरी प्रार्थना

प्रिय यीशु, कृपया इन शब्दों को पढ़ने वाले के पास रहिए। अगर वह डरा हुआ है, तो उसे शांति दीजिए। अगर वह उलझन में है, तो समझने में उसकी मदद कीजिए। अगर वह आहत है, तो उसे सांत्वना दीजिए। अगर वह अकेला महसूस करता है, तो उसे याद दिलाइए कि आप उसे देखते हैं और उसकी परवाह करते हैं।

कृपया पढ़ते समय उसकी अगुवाई कीजिए। उसे जानने में मदद कीजिए कि क्या सच है। उसे समझने में मदद कीजिए कि आप उससे कितना प्रेम करते हैं। उसे आज के लिए हिम्मत और कल के लिए आशा दीजिए। सबसे बढ़कर, मैं प्रार्थना करता हूँ कि वह आपको जाने, आप पर भरोसा करे, और उद्धार का वह उपहार स्वीकार करे जो आप मुफ्त में देते हैं।

उस पर नज़र रखिए। एक-एक कदम करके उसकी अगुवाई कीजिए। उसे जानने दीजिए कि उससे गहरा प्रेम किया जाता है।

यीशु के नाम से, आमीन।

किसी की ओर से प्रेम और प्रार्थना के साथ, जिसने आशा की थी कि यह संदेश आप तक पहुँचे।

अभी जो सवाल आपके मन में है, उसी से शुरू कीजिए। आपसे प्रेम किया जाता है। आप अकेले नहीं हैं।

यीशु, उद्धार और आशा के बारे में बाइबल के उत्तर

अगर आप डरे हुए हैं, उलझन में हैं, सोच रहे हैं कि क्या हुआ, यीशु को समझने की कोशिश कर रहे हैं, या बस आशा ढूँढ़ रहे हैं, तो आपको सब कुछ एक साथ पढ़ना ज़रूरी नहीं है। वह सवाल चुनिए जो आपको यहाँ लाया।

आप चुनने के लिए स्वतंत्र हैं

यह वेबसाइट मदद के लिए है, आप पर दबाव डालने के लिए नहीं। परमेश्वर आपको विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं करता। यीशु आपको अपने पास आने का न्योता देता है। आप पढ़ने, सवाल पूछने, सोचने, प्रार्थना करने और यह चुनने के लिए स्वतंत्र हैं कि आप क्या मानते हैं। अगर आप यीशु को चुनें, तो वह इसलिए हो कि आप सचमुच उसे जानना और उस पर भरोसा करना चाहते हैं।

अगर आप पहले केवल एक चीज़ पढ़ें

यीशु मसीह आपसे प्रेम करता है। उसके पास आने से पहले आपको अपना जीवन सुधारना या पूरी बाइबल समझना ज़रूरी नहीं।

यीशु से मिलें यहाँ से शुरू करें

बाइबल आपके लिए नई है?

पूरी कहानी से शुरू कीजिए

अगर आप सोच रहे हैं कि परमेश्वर, सृष्टि, शैतान, पाप, यीशु, क्रूस और उद्धार पाना आपस में कैसे जुड़े हैं, तो यहाँ से शुरू कीजिए। हम कहानी को क्रम से समझाते हैं और पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा और त्रिएकता की एक बहुत सरल व्याख्या भी देते हैं।

सृष्टि → शैतान → पाप → यीशु → क्रूस → उद्धार पाना

अभी हिम्मत या बाइबल के वचन चाहिए?

अगर आप डरे हुए, चिंतित, अकेले, आहत हैं, सो नहीं पा रहे, या बस शांति चाहते हैं, तो आप सीधे बाइबल के उन वचनों के पन्ने पर जा सकते हैं जो इन्हीं पलों के लिए चुने गए हैं।

हिम्मत और बाइबल के वचन →

चुनिए कि कहाँ से शुरू करें

क्या हुआ?

अगर लोग गायब हैं और आप रैप्चर और बाइबल की भविष्यवाणी के बारे में उत्तर ढूँढ़ रहे हैं, तो यहाँ से शुरू कीजिए।

क्या हुआ? →

अगर परमेश्वर प्रेमी है, तो बुराई क्यों है?

एक कठिन सवाल का कोमल उत्तर मिलना चाहिए। जानिए कि बाइबल स्वतंत्र चुनाव, एक टूटी हुई दुनिया, दुख, यीशु और बुराई को खत्म करने के परमेश्वर के वादे के बारे में क्या कहती है।

परमेश्वर बुराई क्यों होने देता है? →

यीशु से मिलें

यीशु मसीह कौन है? उसके प्रेम, उसके जीवन, क्रूस और उसके मरे हुआओं में से जी उठने के बारे में जानिए।

यीशु से मिलें →

पाप क्या है?

अगर पाप शब्द कठोर या उलझन भरा लगता है, तो रोज़मर्रा के सरल उदाहरणों से जानिए कि इसका क्या मतलब है।

पाप का क्या मतलब है? →

मुझे यीशु की ज़रूरत क्यों है?

समझिए कि पाप हमें परमेश्वर से क्यों अलग करता है, यीशु ने हमारी जगह क्यों ली, और उसकी मृत्यु और मरे हुआओं में से जी उठना क्यों मायने रखता है।

यीशु क्यों? →

मेरा उद्धार कैसे हो सकता है?

उद्धार परमेश्वर का उपहार है। जानिए कि बाइबल क्षमा, यीशु पर विश्वास करने, और परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन के बारे में क्या कहती है।

उद्धार कैसे पाएँ →

मैं प्रार्थना कैसे करूँ?

प्रार्थना परमेश्वर से बात करना है। जानिए कि हम किससे प्रार्थना करते हैं, यीशु के नाम से प्रार्थना क्यों करते हैं, और प्रार्थना कितनी सरल हो सकती है।

प्रार्थना कैसे करें →

विश्वास क्या है?

विश्वास का मतलब है यीशु पर भरोसा करना, तब भी जब आप न देख पाएँ कि आगे क्या होगा।

विश्वास क्या है? →

मैं अभी-अभी मसीही बना हूँ। अब आगे क्या?

प्रार्थना, बाइबल पढ़ने, बढ़ने, क्षमा, दूसरे मसीही लोगों के साथ रहने, और यीशु के पीछे चलने के आसान अगले कदम।

आगे क्या होता है? →

आत्मिक बुराई से लड़ाई और परमेश्वर के हथियार

जानिए कि बाइबल शैतान, परीक्षा, दोषारोपण और परमेश्वर के पूरे हथियारों के बारे में क्या कहती है।

आत्मिक युद्ध →

स्वर्ग और अनंत काल

स्वर्ग, परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन, न्याय, और यीशु में हमारी आशा के बारे में बाइबल क्या कहती है?

स्वर्ग के बारे में पढ़ें →

सांत्वना और आराधना

अगर आप किसी को खोने के बाद दुखी, डरे हुए, अकेले, या बोझ से दबे हैं, तो पवित्र शास्त्र और हिम्मत के लिए यहाँ आइए।

सांत्वना पाएँ →

जीवित रहने और आपातकाल की मदद

जीवित रहने, आपातकालीन योजना, भोजन, पानी, आश्रय और संकट की व्यावहारिक जानकारी।

व्यावहारिक मदद →

बाइबल की और मदद

बाइबल की भविष्यवाणी

इस साइट की बाइबल की भविष्यवाणी और प्रकाशितवाक्य की सामग्री पढ़ें।

बाइबल की भविष्यवाणी →

पूरी ऑफ़लाइन गाइड

पूरी सार्वजनिक वेबसाइट को ऑफ़लाइन पढ़ने के लिए सहेजिए या प्रिंट कीजिए।

पूरी गाइड डाउनलोड करें →

अपनी भाषा में पढ़ें

भाषा चुनने वाले मेनू से साइट को कई भाषाओं में अनुवाद कीजिए।

भाषा में मदद →

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

क्या यीशु मुझसे प्रेम करता है?

हाँ। बाइबल कहती है कि परमेश्वर संसार से प्रेम करता है और उसने हमारे लिए यीशु को भेजा। उसके पास आने से पहले आपको सिद्ध बनना ज़रूरी नहीं।

क्या परमेश्वर मुझे उस सब के लिए क्षमा कर सकता है जो मैंने किया है?

हाँ। बाइबल सिखाती है कि क्षमा यीशु के द्वारा दी जाती है। आप सच्चाई से उसके पास आ सकते हैं और उससे क्षमा माँग सकते हैं।

मैं मसीही कैसे बनूँ?

यीशु मसीह पर भरोसा कीजिए। विश्वास कीजिए कि वह आपके पापों के लिए मरा और फिर जी उठा। उससे माँगिए कि वह आपको क्षमा करे, आपको बचाए, और आपके जीवन की अगुवाई करे।

अगर मैं बाइबल के बारे में लगभग कुछ नहीं जानता तो?

कोई बात नहीं। एक-एक सवाल से शुरू कीजिए। यह गाइड सरल शब्दों का इस्तेमाल करती है और बाइबल की बातें साथ-साथ समझाती चलती है।

आपको आज सब कुछ समझना ज़रूरी नहीं है।

एक सवाल से शुरू कीजिए। एक पन्ना पढ़िए। एक सरल प्रार्थना कीजिए। यीशु आपसे यह नहीं माँग रहा कि उसके पास आने से पहले आप कोई विशेषज्ञ बन जाएँ।

यीशु से मिलेप्रार्थना कैसे करें

अगर लोग अचानक गायब हो गए हैं, तो यहाँ से शुरू कीजिए।

Millions Missing?

अगर आप डरे हुए या उलझन में हैं, तो आपको सब कुछ एक साथ समझना ज़रूरी नहीं। यह गाइड प्रेम से छोड़ी गई थी। एक-एक बात लीजिए।

क्या हुआ होगा? यीशु से मिलें मुझे अब क्या करना चाहिए?

अगर आप बाइबल में नए हैं

हर विषय को समझने की कोशिश करने से पहले बड़ी तस्वीर से शुरू कीजिए। हमारा सृष्टि-से-क्रूस-तक का पन्ना क्रम से परमेश्वर, त्रिएकता, सृष्टि, शैतान, मनुष्य के गिरने, पाप, यीशु, क्रूस, मरे हुए में से जी उठने और उद्धार पाने को समझाता है।

सृष्टि से क्रूस तक की कहानी पढ़ें →

आपके लिए एक व्यक्तिगत संदेश

अगर आप यह पढ़ रहे हैं, तो कृपया जान लीजिए कि यह प्रेम से तैयार किया गया था।

हो सकता है मैं आपका नाम या आपकी कहानी कभी न जान पाता, पर **मैंने हर उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना की जो एक दिन इन शब्दों को ढूँढ़कर पढ़ेगा। मैंने आपके लिए प्रार्थना की।**

मैंने प्रार्थना की कि परमेश्वर आपको समझने में मदद करे कि क्या हुआ है, आपकी रक्षा करे, आपको अच्छी समझ दे, डर के समय आपको सांत्वना दे, और सबसे बढ़कर यह जानने में आपकी मदद करे कि यीशु मसीह आपसे कितना गहरा प्रेम करता है।

कृपया इसे किसी ऐसे व्यक्ति के पत्र की तरह पढ़िए जिसे आपकी इतनी परवाह थी कि जो कुछ मदद कर सकता था वह सब पीछे छोड़ गया। हो सकता है आप डरे, गुस्से में, उलझन में, किसी को खोने के बाद दुखी हों, या बस यह न जानते हों कि क्या मानें। आपको आज सब कुछ समझना ज़रूरी नहीं। यीशु से शुरू कीजिए और एक-एक कदम बढ़ाइए।

मेरी सबसे बड़ी आशा बस यह नहीं कि यह गाइड कठिन दिनों में आपकी मदद करे। **मेरी सबसे बड़ी आशा यह है कि आप यीशु मसीह पर विश्वास रखें और परमेश्वर के अनुग्रह से, किसी दिन मैं स्वर्ग में आपसे मिल सकूँ।**

अगर वह दिन आए, तो मुझे आशा है कि आप मुझे ढूँढ़ेंगे और बताएँगे कि आपने यह पढ़ा था। वह कितनी सुंदर मुलाकात होगी।

आपके लिए प्रार्थना की गई है। आपसे प्रेम किया जाता है। और अब भी आशा है।

मुझे अब क्या करना चाहिए? अपनी ज़रूरत की चीज़ ढूँढ़िए

क्या हुआ?

रैप्चर, महासंकट, बच्चे और प्रियजन।

यहाँ से शुरू करें →

यीशु से मिलें

उस मित्र से मिलिए जिसे मैं सबसे ज़्यादा चाहता हूँ कि आप जानें।

उससे मिलें →

उद्धार कैसे पाएँ

यूहन्ना 3:16, रोमियों 10:9, क्रूस और मरे हुएों में से जी उठना।

यह पढ़ें →

स्वर्ग और अनंत काल

सोना, सुंदर पत्थर, जीवन की नदी, परमेश्वर की उपस्थिति, और यीशु की चेतावनियाँ।

और जानें →

प्रकाशितवाक्य और दानियेल

बाइबल की भविष्यवाणी की एक सरल गाइड।

बाइबल की भविष्यवाणी समझें →

हिम्मत और बाइबल के वचन

डर, चिंता, फ़िक्र, अकेलेपन, शोक, नींद न आने वाली रातों, शांति, बल और परमेश्वर के प्रेम को याद करने के लिए बाइबल के वचन।

हिम्मत देने वाले वचन पढ़ें →

सांत्वना और आराधना

डर, किसी को खोने के बाद के दुख और अकेलेपन के लिए पवित्र शास्त्र और गीत।

सांत्वना पाएँ →

व्यावहारिक मदद

आपातकालीन कदम, भोजन, सामान, और लंबे आपातकाल के लिए तैयारी।

व्यावहारिक मदद पाएँ →

ऑफ़लाइन पुस्तकालय

मुफ़्त KJV बाइबल, प्रिंट करने लायक गाइड और USB ड्राइव के सुझाव।

मदद डाउनलोड करें →

एक आखिरी बात जो मैं चाहता हूँ आप याद रखें

इस गाइड को बंद करने से पहले, मैं चाहता हूँ कि आप एक बहुत व्यक्तिगत बात याद रखें: **आपके इस पन्ने को खोलने से पहले ही किसी ने आपके लिए प्रार्थना की थी।**

मैंने हर उस व्यक्ति के लिए प्रार्थना की जो किसी दिन इन शब्दों को पढ़ सकता है। मैंने प्रार्थना की कि परमेश्वर आपकी रक्षा करे, आपको समझ दे, यह जानने में मदद करे कि क्या सच है, किसी को खोने के बाद के दुख में आपको सांत्वना दे, और आपको यीशु मसीह तक ले जाए।

मैं नहीं जानता कि यह पढ़ते समय आप कहाँ हैं, आप किस दौर से गुज़रे हैं, या कल क्या लेकर आएगा। पर मैं जानता हूँ कि मैं आपके लिए क्या आशा करता हूँ।

मुझे आशा है कि किसी दिन स्वर्ग में आपसे मिलूँगा।

और अगर हम वहाँ मिले, तो जो डर या परेशानी आपको इस गाइड तक लाई, उसमें से कुछ भी फिर मायने नहीं रखेगा। हम यीशु के साथ होंगे।

तब तक आगे बढ़ते रहिए। उसका वचन पढ़िए। यीशु से सच्चाई से बात कीजिए। उससे अच्छी समझ माँगिए। अपने आस-पास के लोगों की देखभाल कीजिए। और जब आप डरे हों, तो याद रखिए कि आपके इस पन्ने को पाने से बहुत पहले आपके लिए प्रार्थना की गई थी।

मुझे आशा है कि मैं आपको वहाँ देखूँगा।

कॉपी कीजिए। प्रिंट कीजिए। साझा कीजिए।

किसी श्रेय की ज़रूरत नहीं। इस सामग्री को लोगों को यीशु मसीह की ओर ले जाने और पवित्र शास्त्र समझने में उनकी मदद करने के उद्देश्य से कॉपी, प्रिंट, संग्रहित, अनुवादित, रूपांतरित और साझा किया जा सकता है। सार्वजनिक उपयोग के लिए आप जो भी संस्करण तैयार करें, उसमें से व्यक्तिगत पहचान की जानकारी हटा दीजिए।

पूरी ऑफ़लाइन गाइड डाउनलोड करें [शुरुआत पर वापस जाएँ](#)

बाइबल आपके लिए नई है? यहाँ से शुरू कीजिए।

सृष्टि से क्रूस तक की कहानी

अगर बाइबल उलझन भरी लगती है, तो बड़ी तस्वीर से शुरू कीजिए। यह पन्ना कहानी को क्रम से बताता है: परमेश्वर, सृष्टि, शैतान की बगावत, मनुष्य का गिरना, पाप, परमेश्वर की बचाने की योजना, यीशु मसीह, क्रूस, मृतकों में से जी उठना, और उद्धार पाना।

परमेश्वर से शुरू करें मेरा उद्धार कैसे हो सकता है?

1. परमेश्वर कौन है? त्रिएकता की सरल व्याख्या

मसीही लोग **एक ही परमेश्वर को मानते हैं - तीन परमेश्वरों को नहीं**। बाइबल बताती है कि एक सच्चा परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा है। मसीही लोग इसे आम तौर पर **त्रिएकता** कहते हैं (एक परमेश्वर: पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा)।

परमेश्वर को जानने या यीशु पर भरोसा करने से पहले आपको त्रिएकता को पूरी तरह समझना ज़रूरी नहीं है। जो मसीही बरसों से यीशु के पीछे चल रहे हैं, वे भी मानते हैं कि परमेश्वर हमारी पूरी तरह समझा पाने की क्षमता से कहीं बड़ा है।

इसे याद रखने का सबसे आसान तरीका:

परमेश्वर एक है।

पिता परमेश्वर है।

पुत्र यीशु परमेश्वर है।

पवित्र आत्मा परमेश्वर है।

पिता पुत्र नहीं है। पुत्र पवित्र आत्मा नहीं है। पवित्र आत्मा पिता नहीं है। फिर भी परमेश्वर केवल एक ही है।

“हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है;” - व्यवस्थाविवरण 6:4 (HOV)

यीशु बैतलहम में जन्म लेने से पहले भी था

बाइबल यीशु को “वचन” कहती है और बताती है कि वह आरंभ में परमेश्वर के साथ था और परमेश्वर था। यह भी कहती है कि सब कुछ उसी के द्वारा बनाया गया। बाद में वही वचन देह बनकर हमारे बीच रहा।

“आदि में वचन था, और वचन परमेश्वर के साथ था, और वचन परमेश्वर था।” - यूहन्ना 1:1 (HOV)

“सब कुछ उसी के द्वारा उत्पन्न हुआ और जो कुछ उत्पन्न हुआ है उस में से कोई भी वस्तु उसके बिना उत्पन्न न हुई।” -

यूहन्ना 1:3 (HOV)

“और वचन देहधारी हुआ; और अनुग्रह और सच्चाई से परिपूर्ण होकर हमारे बीच में डेरा किया...” - यूहन्ना 1:14 (HOV)

पवित्र आत्मा सृष्टि के समय मौजूद था

“और परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डलाता था।” - उत्पत्ति 1:2 (HOV)

पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की एक साफ़ तस्वीर

यीशु के बपतिस्मा के समय पुत्र यीशु पानी में है, पवित्र आत्मा कबूतर की तरह उतरता है, और पिता की आवाज़ स्वर्ग से सुनाई देती है। वे अलग-अलग हैं, फिर भी पवित्र शास्त्र सिखाता है कि परमेश्वर एक है।

“और देखो, यह आकाशवाणी हुई, कि यह मेरा प्रिय पुत्र है, जिस से मैं अत्यन्त प्रसन्न हूँ।” - मत्ती 3:17 (HOV)

इसलिए जब आप आगे पढ़ें कि परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, कि यीशु ने अपने पिता से प्रार्थना की, या कि पवित्र आत्मा विश्वासियों में काम करता है, तब आप तीन अलग-अलग परमेश्वरों के बारे में नहीं पढ़ रहे होते। आप उस एक सच्चे परमेश्वर के बारे में जान रहे होते हैं जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में प्रगट हुआ।

2. परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की

“आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।” - उत्पत्ति 1:1 (HOV)

परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। उत्पत्ति की पुस्तक बताती है कि परमेश्वर ने उजियाला, आकाश, ज़मीन, समुद्र, पेड़-पौधे, सूरज और चाँद, जानवर और मनुष्य बनाए। जब सृष्टि पूरी हुई, तो पवित्र शास्त्र कहता है कि परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था उसे देखा और वह “बहुत ही अच्छा” था।

परमेश्वर की सृष्टि में मनुष्य खास तौर पर अनमोल हैं, क्योंकि बाइबल कहती है कि हमें **उसके स्वरूप में** बनाया गया। इसका मतलब यह नहीं कि परमेश्वर का मनुष्य जैसा शरीर है या हम शरीर से उस जैसे दिखते हैं। इसका मतलब है कि उसने हमें एक खास तरीके से बनाया जिसमें उसके स्वभाव की झलक है।

हम प्रेम कर सकते हैं, सोच सकते हैं, रच सकते हैं, बात कर सकते हैं, अर्थपूर्ण चुनाव कर सकते हैं, सही और गलत को पहचान सकते हैं, दूसरों की परवाह कर सकते हैं, और अपने सृष्टिकर्ता के साथ रिश्ता रख सकते हैं। हर इंसान की कीमत है, क्योंकि हर इंसान में परमेश्वर का स्वरूप है - चाहे उसकी उम्र, क्षमता, पृष्ठभूमि या हालात कुछ भी हों।

“तब परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप के अनुसार उत्पन्न किया...” - उत्पत्ति 1:27 (HOV)

3. शैतान के साथ क्या हुआ?

बाइबल हमें बताती है कि एक असली आत्मिक शत्रु है जिसे शैतान, या इब्लीस कहते हैं। आप उसे साँप, परखने वाला या दोष लगाने वाला भी कहा गया देख सकते हैं। उसका मकसद लोगों को परमेश्वर से दूर खींचना है, इसलिए नहीं कि लोग बेकार हैं, बल्कि इसलिए कि लोग परमेश्वर के लिए बहुत मायने रखते हैं।

“और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना साँप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया...” - प्रकाशितवाक्य 12:9 (HOV)

बाइबल कहती है कि शैतान को परमेश्वर ने बनाया था, पर उसने परमेश्वर के विरुद्ध बगावत की। वह परमेश्वर के तरीके की जगह अपना तरीका चाहता था। बाइबल इस बगावत की केवल झलकियाँ देती है, कोई एक लंबी और विस्तृत कहानी नहीं, इसलिए कुछ बातों को पक्के तौर पर कहने से हमें सावधान रहना चाहिए।

शैतान लोगों से नफ़रत क्यों करता है?

बाइबल में कोई एक वचन नहीं है जो सीधे कहे, “शैतान इंसानों से इसलिए नफ़रत करता है क्योंकि वे परमेश्वर के स्वरूप में बने हैं।” परंतु जब हम बाइबल की कहानी को जोड़कर देखते हैं, तो बहुत से मसीही इसे उसके कारण का एक अहम हिस्सा मानते हैं।

आप उस परमेश्वर के स्वरूप में बने हैं जिसके विरुद्ध शैतान ने बगावत की। परमेश्वर इंसानों से प्रेम करता है; उन्हें इसलिए बनाया गया कि वे उसे जानें, और उन्हें उसके साथ रिश्ते का न्योता दिया गया है। शैतान परमेश्वर का विरोधी है, इसलिए वह उन लोगों के भी विरुद्ध काम करता है जिनमें परमेश्वर का स्वरूप है और जिनसे परमेश्वर प्रेम करता है।

इसका मतलब यह नहीं कि आपको शैतान से डरना चाहिए। वह **परमेश्वर के बराबर नहीं है।** वह कोई दूसरा ईश्वर नहीं है। वह एक सृजा हुआ प्राणी है, और बाइबल सिखाती है कि उसकी अंतिम हार निश्चित है। उसे समझने का मकसद आपको डराना नहीं है। इसका मकसद यह समझने में आपकी मदद करना है कि बाइबल परीक्षा, झूठ, आत्मिक हमलों और परमेश्वर के निकट बने रहने की हमारी ज़रूरत के बारे में क्यों बात करती है।

बहुत से मसीही शैतान की सुंदरता, घमंड और बगावत की तस्वीर के लिए **यहेजकेल 28:12-17** और **यशायाह 14:12-15** की ओर भी देखते हैं। यहेजकेल 28 सोर के राजा से कहा गया था, इसलिए मसीही लोग इस बात में एकमत नहीं हैं कि यह सीधे शैतान का वर्णन कैसे करता है। फिर भी इसकी भाषा अदन, अभिषिक्त करुब, बड़ी सुंदरता, और एक सृजे हुए प्राणी की बात करती है जिसमें बाद में पाप पाया गया।

HOV में यहेजकेल 28:13 **नौ तरह के कीमती पत्थरों** के नाम लेता है। कुछ बाइबल शिक्षक इनकी तुलना प्रकाशितवाक्य 21:19-20 में **नए यरूशलेम की बारह नींव के पत्थरों** से करते हैं और इसमें एक ऐसे प्राणी की तस्वीर देखते हैं जो परमेश्वर की महिमा की नकल करना चाहता था पर चूक गया। बाइबल सीधे तौर पर पत्थरों की गिनती की यह तुलना नहीं करती, और प्रकाशितवाक्य के बारह पत्थर नए यरूशलेम का वर्णन करते हैं, स्वयं परमेश्वर का नहीं। इसलिए इसे एक सहायक तस्वीर समझना चाहिए, बाइबल का सीधा कथन नहीं।

सबसे साफ़ बात यशायाह में मिलती है: **“मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।”** शैतान वह स्थान चाहता था जो परमेश्वर का है। पर उसे परमेश्वर ने बनाया था। वह कभी परमेश्वर नहीं बन सकता था और न उसके बराबर हो सकता था।

“मैं मेघों से ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।” – यशायाह 14:14 (HOV)

4. साँप, आदम और हव्वा, और मनुष्य का गिरना

उत्पत्ति 3 बताता है कि साँप ने हव्वा को परमेश्वर के वचन पर शक करने और उसकी आज्ञा तोड़ने के लिए बहकाया। आदम ने भी आज्ञा तोड़ी। पाप इंसान की कहानी में आ गया, और उसके पीछे मृत्यु आई।

“इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई...” - रोमियों 5:12 (HOV)

इसी कारण जिस दुनिया को हम जानते हैं उसमें मृत्यु, दर्द, परीक्षा, टूटे रिश्ते, अन्याय और परमेश्वर से अलगाव है। समस्या परमेश्वर की अच्छी सृष्टि में नहीं थी। बगावत और पाप ने टूटन पैदा की।

5. पाप क्या है, और यह क्यों मायने रखता है?

पाप केवल बड़े-बड़े अपराधों की सूची नहीं है। पाप परमेश्वर के सिद्ध स्तर तक न पहुँच पाना और उसकी इच्छा के विरुद्ध जाना है। इसमें वे बातें भी आती हैं जिन्हें हम “छोटी” समझ सकते हैं, जैसे झूठ बोलना, चोरी, जलन, वासना, नफ़रत, स्वार्थ, या जानबूझकर वह चुनना जिसे हम गलत जानते हैं।

क्षमा की ज़रूरत के लिए आपको दस आज्ञाओं में से हर एक को तोड़ना ज़रूरी नहीं है। एक ही पाप दिखा देता है कि हम चूक गए हैं। याकूब कहता है कि जो पूरी व्यवस्था का पालन करे पर एक ही बात में चूक जाए, वह व्यवस्था तोड़ने का दोषी है।

“इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।” - रोमियों 3:23 (HOV)

“क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है, परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा।”

- याकूब 2:10 (HOV)

पाप हमें एक पवित्र परमेश्वर से अलग कर देता है। यशायाह कहता है, “तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है।” हम यह दिखावा करके कि हमने कभी पाप नहीं किया, या यह आशा करके कि हमारे अच्छे काम सब कुछ मिटा देंगे, इस समस्या को नहीं मिटा सकते।

“परन्तु तुम्हारे अधर्म के कामों ने तुम को तुम्हारे परमेश्वर से अलग कर दिया है...” - यशायाह 59:2 (HOV)

पाप की और विस्तार से, रोज़मर्रा की भाषा में व्याख्या पढ़ें →

6. पाप की मज़दूरी और परमेश्वर की बचाने की योजना

“क्योंकि पाप की मज़दूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।” - रोमियों 6:23 (HOV)

मज़दूरी वह है जो कमाई जाती है। पवित्र शास्त्र कहता है कि पाप से मृत्यु कमाई जाती है, जबकि परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का उपहार है। प्रकाशितवाक्य 20 आग की झील को “दूसरी मृत्यु” कहता है। बाइबल अंतिम न्याय को गंभीर और सच्चा बताती है।

परन्तु परमेश्वर ने लोगों को बिना आशा के नहीं छोड़ा। शुरू से ही पवित्र शास्त्र परमेश्वर के बचाव की ओर इशारा करता है। मसीही लोग उत्पत्ति 3:15 को उस व्यक्ति की ओर पहला वादा मानते हैं जो अंत में साँप को हराएगा। पुराना नियम मसीहा के लिए रास्ता तैयार करता रहता है।

हमारे पाप के लिए परमेश्वर का उत्तर बस यह नहीं था कि, “और कोशिश करो।” उसका उत्तर था कि वह एक उद्धारकर्ता दे।

7. परमेश्वर ने यीशु को भेजा

यीशु मसीह, जो अनन्त पुत्र है, उस संसार में आया जिसे उसने बनाया था। वह परमेश्वर रहते हुए सचमुच मनुष्य बना। उसने वह जीवन जिया जो हम नहीं जी सकते थे – बिना पाप का।

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया...” – यूहन्ना 3:16 (HOV)

“...वरन सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्पाप निकला।” – इब्रानियों 4:15 (HOV)

यीशु ने सिखाया, चंगा किया, करुणा दिखाई, पाखंड का सामना किया, अपने पास आने वाले पापियों का स्वागत किया, और पिता को प्रगट किया। पर वह केवल एक उदाहरण बनने के लिए नहीं आया था। वह बचाने आया था।

यीशु से और विस्तार से मिलें →

8. क्रूस क्यों?

क्योंकि हम अपने पाप का कर्ज चुकाकर परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन में नहीं जा सकते थे, इसलिए यीशु ने अपनी इच्छा से हमारी जगह ले ली। वह इसलिए नहीं मरा कि उसने पाप किया था। वह हमारे लिए मरा।

“परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।” – रोमियों 5:8 (HOV)

“वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए सलीब पर चढ़ गया...” – 1 पतरस 2:24 (HOV)

क्रूस वह जगह है जहाँ परमेश्वर का न्याय और परमेश्वर की दया मिलते हैं। जो हम अपने ऊपर से नहीं हटा सकते थे, यीशु ने उसे अपने ऊपर ले लिया।

पढ़ें: मुझे यीशु की ज़रूरत क्यों है? →

9. यीशु मरे हुआं में से जी उठा

कहानी यीशु के कब्र में रहने पर खत्म नहीं हुई। नया नियम घोषणा करता है कि वह फिर जी उठा। मसीही विश्वास यीशु मसीह की मृत्यु और मृतकों में से जी उठने पर टिका है।

“...पवित्र शास्त्र के वचन के अनुसार मसीह हमारे पापों के लिये मर गया। और गाड़ा गया; और पवित्र शास्त्र के अनुसार तीसरे दिन जी भी उठा।” – 1 कुरिन्थियों 15:3-4 (HOV)

यीशु ने मृत्यु को जीत लिया। जो आपसे अपने ऊपर भरोसा करने को कह रहा है, वह जीवित है।

10. आपके लिए इसका क्या मतलब है?

आप लौटकर बिना पाप का जीवन नहीं जी सकते। आपको जीना ज़रूरी भी नहीं है। जो आप अपने लिए कभी नहीं कर सकते थे, यीशु वह पहले ही कर चुका है। उद्धार उस पर विश्वास के द्वारा परमेश्वर के उपहार के रूप में पाया जाता है।

परमेश्वर आपको चुनने का अधिकार देता है

परमेश्वर आपसे प्रेम करता है, पर वह आपको अपने से प्रेम करने, उस पर भरोसा करने, या उसके पीछे चलने के लिए मजबूर नहीं करता। पूरी बाइबल में परमेश्वर लोगों को अपने पास आने के लिए बुलाता है और उन्हें चुनने देता है कि वे कैसे उत्तर देंगे।

यीशु आपको बुलाता है। वह मजबूर नहीं करता। आप सवाल पूछ सकते हैं, बाइबल खुद पढ़ सकते हैं, और तय कर सकते हैं कि आप क्या मानते हैं। किसी को भी ऐसी प्रार्थना बोलने के लिए दबाव महसूस नहीं करना चाहिए जिसे वह दिल से नहीं मानता।

“हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।” - मत्ती 11:28 (HOV)

ध्यान दीजिए कि यीशु कहता है, **“मेरे पास आओ।”** यह एक निमंत्रण है। अगर आप यीशु के पास आना चाहें, तो सच्चाई से आइए। आपको पूरी समझ या पूरा विश्वास होना ज़रूरी नहीं है। आप बस कह सकते हैं, “यीशु, मैं आपको जानना चाहता हूँ। विश्वास करने में मेरी मदद कीजिए। समझने में मेरी मदद कीजिए।”

“क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।” - इफिसियों 2:8 (HOV)

“कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मेरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।” - रोमियों 10:9 (HOV)

आपको पहले सिद्ध बनना ज़रूरी नहीं है। आपको पूरी बाइबल जानना ज़रूरी नहीं है। आप सच्चाई से यीशु के पास आ सकते हैं, अपना पाप मान सकते हैं, विश्वास कर सकते हैं कि वह मरा और फिर जी उठा, और उस पर अपने उद्धारकर्ता और प्रभु के रूप में भरोसा कर सकते हैं।

मेरा उद्धार कैसे हो सकता है? मैं प्रार्थना कैसे करूँ? विश्वास क्या है?

11. कहानी आगे जारी है

यीशु के पीछे चलना शुरुआत है, अंत नहीं। मसीही लोग प्रार्थना करना, पवित्र शास्त्र पढ़ना, विश्वास में बढ़ना, परीक्षा का सामना करना, और परमेश्वर के सारे हथियार बाँधना सीखते हैं। बाइबल यह भी सिखाती है कि शैतान की अंतिम हार निश्चित है और यीशु मसीह राज्य करेगा।

मसीही बनने के बाद क्या होता है? →

शैतान और परमेश्वर के हथियारों के बारे में जानें →

स्वर्ग और अनंत काल के बारे में पढ़ें →

एक कठिन सवाल का कोमल उत्तर मिलना चाहिए।

अगर परमेश्वर इतना प्रेमी है, तो वह दुनिया में बुराई क्यों होने देता है?

अगर आपने यह इसलिए पूछा है कि आप आहत हुए हैं, किसी को खो दिया है, क्रूरता देखी है, या बस समझ नहीं पा रहे कि प्रेम करने वाला परमेश्वर दुख क्यों होने देगा, तो आपका पूछना गलत नहीं है। बाइबल खुद ऐसे लोगों से भरी है जिन्होंने सवालों के साथ परमेश्वर को पुकारा। यह पन्ना यह दिखावा नहीं करेगा कि हर दर्दनाक हालात का कोई आसान स्पष्टीकरण है।

पहली बात: परमेश्वर बुराई को अच्छा नहीं कहता

बाइबल यह नहीं सिखाती कि परमेश्वर दुख, क्रूरता, दुर्व्यवहार, बीमारी, मृत्यु या अन्याय का आनंद लेता है। परमेश्वर पवित्र और भला है। बुराई को हमें कभी यह कहकर सही नहीं ठहराना चाहिए कि, “परमेश्वर ने यही चाहा होगा।”

“परमेश्वर ज्योति है और उस में कुछ भी अन्धकार नहीं।” – 1 यूहन्ना 1:5 (HOV)

परमेश्वर का किसी बात को कुछ समय के लिए होने देना और उसे स्वीकार करना, इन दोनों में एक ज़रूरी अंतर है। पवित्र शास्त्र दिखाता है कि परमेश्वर बुराई का विरोध करता है, बुराई का न्याय करता है, टूटे मनवालों को सांत्वना देता है, और अंत में बुराई को हमेशा के लिए खत्म करने का वादा करता है।

1. प्रेम में सच्चा चुनाव शामिल है

परमेश्वर ने मनुष्यों को अर्थपूर्ण चुनाव करने में सक्षम बनाया। वह ऐसे प्राणी बना सकता था जो आज्ञाकारिता के अलावा कुछ और चुन ही न सकें, पर ज़बरदस्ती की आज्ञाकारिता और स्वेच्छा से दिए गए प्रेम में फ़र्क है।

इस स्वतंत्रता का मतलब है कि लोग दया, विश्वासयोग्यता, बलिदान और प्रेम चुन सकते हैं – पर वे स्वार्थ, नफ़रत, हिंसा, बेईमानी और क्रूरता भी चुन सकते हैं। हमारी दुनिया की बहुत-सी बुराई इसलिए आती है कि इंसान अपनी स्वतंत्रता का इस्तेमाल एक-दूसरे को चोट पहुँचाने के लिए करते हैं।

“...आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे...” – यहोशू 24:15 (HOV)

परमेश्वर का लोगों को चुनाव देना इसका मतलब नहीं कि वह उनके हर चुनाव को स्वीकार करता है। वह हमें बुराई के विरुद्ध चेतावनी देता है और जो अच्छा है उसकी ओर बुलाता है।

2. दुनिया वैसी नहीं है जैसी परमेश्वर ने उसे मूल रूप से बनाया था

उत्पत्ति परमेश्वर की सृष्टि को अच्छा बताता है। पर जब लोगों ने परमेश्वर के विरुद्ध बगावत की, तो पाप इंसान की कहानी में आ गया, और पाप के साथ टूटन और मृत्यु आई। बाइबल बताती है कि सृष्टि स्वयं उस टूटन के नीचे कराह रही है।

“क्योंकि हम जानते हैं, कि सारी सृष्टि अब तक मिलकर कराहती और पीड़ा से तड़पती है।” - रोमियों 8:22 (HOV)

इससे समझने में मदद मिलती है कि दुख केवल जानबूझकर की गई मानवीय क्रूरता तक सीमित क्यों नहीं है। हम बीमारी, आपदाएँ, बुढ़ापा, दुर्घटनाएँ और मृत्यु भी एक ऐसी दुनिया में झेलते हैं जो, बाइबल के अनुसार, अब अपनी मूल अटूट दशा में नहीं है।

3. आत्मिक बुराई भी है

बाइबल सिखाती है कि शैतान और दूसरे बागी आत्मिक प्राणी परमेश्वर का विरोध करते हैं और धोखा देना और नाश करना चाहते हैं। शैतान असली है, पर वह **परमेश्वर के बराबर नहीं** है। वह एक सृजा हुआ प्राणी है, उसकी शक्ति सीमित है, और उसका अंतिम न्याय पवित्र शास्त्र में पहले ही घोषित है।

इसका मतलब यह नहीं कि हर बुरी घटना के लिए अपने आप शैतान को दोष दिया जाए। बाइबल हमें एक बड़ी तस्वीर देती है: मनुष्य के चुनाव, एक गिरी हुई सृष्टि, हमारी अपनी कमज़ोरियाँ, और आत्मिक हमले, ये सब इस टूटी हुई दुनिया में जीवन का हिस्सा हो सकते हैं।

शैतान और परमेश्वर के हथियारों के बारे में और पढ़ें →

4. दुख इस बात का प्रमाण नहीं कि परमेश्वर आपको सज़ा दे रहा है

जब कुछ भयानक होता है, तो यह सोचना स्वाभाविक लगता है कि, “परमेश्वर मुझे सज़ा दे रहा होगा।” पर बाइबल हमें हर त्रासदी के बारे में यह मान लेने की अनुमति नहीं देती।

अय्यूब ने भयंकर दुख सहा, जबकि पुस्तक उसे एक सीधा-सच्चा मनुष्य बताती है। यूहन्ना 9 में यीशु ने इस विचार को ठुकरा दिया कि एक मनुष्य का अंधापन उसके अपने पाप या उसके माता-पिता के पाप के कारण हुआ होगा।

अगर आप दुखी हैं, तो आपको खुद को दोष देकर शुरू करना ज़रूरी नहीं। आप अपने सवाल, गुस्सा, किसी को खोने का दुख और उलझन सच्चाई से परमेश्वर के पास ला सकते हैं।

5. परमेश्वर बुराई को अच्छा कहे बिना उसमें से भलाई निकाल सकता है

बाइबल में बहुत-सी कहानियाँ हैं जिनमें लोगों ने किसी बात का इरादा बुरा रखा, पर परमेश्वर ने उस हालात में काम करके छुटकारा, बढ़ोतरी, या ऐसी भलाई निकाली जो उसमें शामिल लोग तब तक देख नहीं सकते थे।

“यद्यपि तुम लोगों ने मेरे लिये बुराई का विचार किया था; परन्तु परमेश्वर ने उसी बात में भलाई का विचार किया...” - उत्पत्ति 50:20 (HOV)

“और हम जानते हैं, कि जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उन के लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करती हैं...” - रोमियों 8:28 (HOV)

इससे दुर्व्यवहार, हत्या, विश्वासघात, बीमारी या त्रासदी “अच्छी” नहीं बन जाती। इसका मतलब है कि बुराई का अंतिम शब्द नहीं होता। परमेश्वर उन हालात में से भी कुछ अच्छा निकाल सकता है जिन्हें अच्छा दिखाने को वह हमसे कभी नहीं कहता।

6. परमेश्वर मनुष्य के दुख से दूर नहीं रहा

मसीही विश्वास हमें ऐसा परमेश्वर नहीं देता जो दर्द को केवल दूर से देखता हो। यीशु इस टूटी हुई दुनिया में आया। उसने भूख, ठुकराया जाना, किसी को खोने का दुख, विश्वासघात, शारीरिक पीड़ा, अन्याय और मृत्यु का अनुभव किया।

“यीशु रोया।” - यूहन्ना 11:35 (HOV)

“परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।” - रोमियों 5:8 (HOV)

क्रूस पर यीशु ने अपनी इच्छा से मनुष्य के दुख में प्रवेश किया और हमारे पाप को अपने ऊपर ले लिया। इसलिए जब आप अपना दर्द यीशु के पास लाते हैं, तो आप किसी ऐसे से बात नहीं कर रहे जो दुख से अनजान है।

7. परमेश्वर हर बुरे काम को अभी क्यों नहीं रोक देता?

यह शायद इस सवाल का सबसे कठिन हिस्सा है। बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर अंत में बुराई का न्याय करेगा और उसे हटा देगा, पर उसने अभी इतिहास को उसके अंतिम न्याय तक नहीं पहुँचाया है।

अभी के लिए, परमेश्वर लोगों को अपनी ओर मुड़ने के लिए समय देता रहता है। पवित्र शास्त्र परमेश्वर के धीरज को इस इच्छा से जोड़ता है कि लोग पश्चाताप तक पहुँचें।

“प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता... पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता, कि कोई नाश हो; वरन यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिले।” - 2 पतरस 3:9 (HOV)

हम फिर भी पूछ सकते हैं कि परमेश्वर एक हालात में क्यों दखल देता है और दूसरे में चुप क्यों लगता है। बाइबल हर अलग त्रासदी के लिए पूरा स्पष्टीकरण नहीं देती। विश्वास का मतलब यह दिखावा करना नहीं कि हम वह जानते हैं जो परमेश्वर ने समझाया नहीं।

8. बुराई हमेशा नहीं रहेगी

बाइबल की कहानी दुनिया के टूटे हुए बने रहने पर खत्म नहीं होती। शैतान का अंतिम न्याय प्रकाशितवाक्य में बताया गया है, और परमेश्वर एक ऐसे भविष्य का वादा करता है जिसमें मृत्यु, शोक, रोना और पीड़ा नहीं होंगे।

“और उन का भरमाने वाला शैतान आग की झील में डाल दिया गया...” – प्रकाशितवाक्य 20:10 (HOV)

“और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी...” – प्रकाशितवाक्य 21:4 (HOV)

मसीही आशा यह नहीं है कि बुराई काल्पनिक है। यह है कि बुराई अस्थायी है और यीशु अंत में उसे हरा देगा।

9. अगर मैं फिर भी नहीं समझ पाऊँ तो?

आपको पूछते रहने की अनुमति है। विश्वास का मतलब अपने सवालों को बंद कर देना नहीं है। पवित्र शास्त्र के कुछ सबसे विश्वासयोग्य लोगों ने भी परमेश्वर से पूछा, “क्यों?”

आप इतनी सरल प्रार्थना कर सकते हैं:

“परमेश्वर, मैं नहीं समझता कि आपने यह क्यों होने दिया। मैं आहत और उलझन में हूँ। अगर आप हैं, तो कृपया मुझे अपने आपको जानने में मदद कीजिए। अगले कदम के लिए मुझे पर्याप्त उजियाला दीजिए।”

परमेश्वर आपको विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं करता। आप जाँच-पड़ताल कर सकते हैं, पवित्र शास्त्र पढ़ सकते हैं, सवाल पूछ सकते हैं, और तय कर सकते हैं कि आप यीशु को कैसे उत्तर देंगे। निमंत्रण सच्चा है, और आपका चुनाव भी।

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

अगर परमेश्वर प्रेमी है, तो वह दुख क्यों होने देता है?

बाइबल सिखाती है कि हमारी दुनिया पाप से टूटी हुई है और लोगों के पास असली चुनाव हैं। परमेश्वर बुराई को अच्छा नहीं कहता, और वह वादा करता है कि बुराई हमेशा नहीं रहेगी।

क्या हर बुरी घटना परमेश्वर की ओर से सज़ा है?

नहीं। बाइबल यह नहीं सिखाती कि हर बीमारी, दुर्घटना या त्रासदी का मतलब है कि परमेश्वर उस व्यक्ति को सज़ा दे रहा है।

जब मैं दुखी होता हूँ, तब परमेश्वर कहाँ है?

यीशु दर्द, शोक, विश्वासघात और दुख को समझता है। आप अपना डर और अपनी चोट उसके पास ला सकते हैं, तब भी जब आप समझ न पाएँ कि कुछ क्यों हुआ।

संक्षिप्त उत्तर

प्रेम करने वाला परमेश्वर बुराई को क्यों होने देता है? बाइबल हमें उत्तर के कई टुकड़े देती है: परमेश्वर ने लोगों को असली चुनाव के साथ बनाया; लोग एक गिरी हुई और टूटी हुई सृष्टि में रहते हैं; आत्मिक बुराई मौजूद है; परमेश्वर धीरजवंत है और उसने अभी अंतिम न्याय नहीं किया है; वह भयानक हालात में से भी भलाई निकाल सकता है; और वह यीशु मसीह के द्वारा स्वयं हमारे दुख में उतरा।

पर मसीही विश्वास यह नहीं कहता कि हम इस जीवन में हर त्रासदी को समझ जाएँगे। वह कहता है कि परमेश्वर भला है, यीशु हमारे दुख में आया है, बुराई का न्याय होगा, और एक दिन परमेश्वर सब कुछ ठीक कर देगा।

पूरी कहानी पढ़ें यीशु से मिलें मुझे सांत्वना चाहिए

अगर आप पूछ रहे हैं कि यीशु कौन है, वह क्यों मायने रखता है, या क्या वह सचमुच आपसे प्रेम करके आपको क्षमा कर सकता है, तो यहाँ से शुरू कीजिए।

यीशु मसीह कौन है?

यीशु मसीह बाइबल के केंद्र में है और इस गाइड के केंद्र में है। मसीही लोग मानते हैं कि वह परमेश्वर का पुत्र है, वह लोगों को पाप से बचाने आया, वह मरा और फिर जी उठा, और परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन उसी के द्वारा मिलता है।

यीशु से मिलिए — केवल धर्म नहीं

यीशु के पास आने से पहले आपको बाइबल का हर हिस्सा समझना ज़रूरी नहीं। आप यह जानकर शुरू कर सकते हैं कि वह कौन है, उसने क्या सिखाया, उसने क्या किया, और मसीही लोग क्षमा, उद्धार, आशा और परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन के लिए उस पर भरोसा क्यों करते हैं।

बाइबल कहती है, “**क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया...**” — यूहन्ना 3:16 (HOV) परमेश्वर का प्रेम केवल उन लोगों के लिए नहीं है जिनके पास पहले से सब कुछ ठीक है।

क्या यीशु मुझसे प्रेम करता है?

अगर यही सवाल आपको यहाँ लाया है, तो बाइबल का संदेश यह है कि परमेश्वर का प्रेम लोगों तक उनकी टूटन, डर, पछतावे और ज़रूरत में पहुँचता है। यीशु आपसे यह नहीं माँगता कि उसके पास आने से पहले आप सिद्ध बन जाएँ।

बाइबल जिसे **पाप** कहती है उसमें वे गलत काम शामिल हैं जो हम करते हैं, वे तरीके जिनसे हम परमेश्वर की आज्ञाएँ तोड़ते हैं, और वे तरीके जिनसे हम सही से चूक जाते हैं। दस आज्ञाएँ परमेश्वर के स्तर के साफ़ उदाहरण देती हैं। हर इंसान को अनुग्रह और क्षमा की ज़रूरत है।

क्या यीशु मुझे क्षमा कर सकता है?

हाँ। मसीही संदेश यह है कि क्षमा यीशु मसीह के द्वारा उपलब्ध है। आपका अतीत आपको आज परमेश्वर की ओर मुड़ने से नहीं रोकना चाहिए। आप यीशु से सच्चाई से बात कर सकते हैं, जो गलत है उसे मान सकते हैं, क्षमा माँग सकते हैं, और उस पर भरोसा रख सकते हैं।

पढ़ें: उद्धार कैसे पाएँ

यीशु और स्वर्ग

यीशु ने कहा, “**मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँचता।**” — यूहन्ना 14:6 (HOV) यह गाइड यीशु की ओर इशारा करती है क्योंकि बाइबल उसे पिता तक और परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन तक पहुँचने का मार्ग बताती है।

पढ़ें कि बाइबल स्वर्ग और परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन के बारे में क्या कहती है।

आप अभी यीशु से बात कर सकते हैं

आपको कोई खास धार्मिक शब्द चाहिए नहीं। आप बस उसे सच बता सकते हैं कि आप क्या मानते हैं, आपको किस बात का डर है, आपको किस बात का पछतावा है, और आपको क्या चाहिए।

अगर आप उस पर अपना विश्वास रखने के लिए तैयार हैं, तो सरल व्याख्या और उद्धार पाने की प्रार्थना के लिए उद्धार पाएँ पन्ने पर जाइए।

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

यीशु कौन है?

यीशु परमेश्वर का पुत्र है। मसीही लोग मानते हैं कि वह पृथ्वी पर आया, बिना पाप का जीवन जिया, हमारे लिए क्रूस पर मरा, और मरे हुआँ में से जी उठा।

क्या यीशु मुझसे तब भी प्रेम करता है जब मैंने गलत चुनाव किए हैं?

हाँ। यीशु के पास आने से पहले आपको खुद को सुधारना ज़रूरी नहीं। वह आपको सच्चाई से आने और उसकी क्षमा पाने का न्योता देता है।

मैं यीशु को जानना कैसे शुरू करूँ?

प्रार्थना में उससे बात कीजिए। पढ़िए कि बाइबल उसके बारे में क्या कहती है। उससे माँगिए कि वह आपको समझने में मदद करे कि वह कौन है और आपकी अगुवाई करे।

मुझे आगे कहाँ जाना चाहिए?

अगर आप इसलिए यहाँ हैं कि लोग अचानक गायब हो गए हैं या आप रैप्चर (उठा लिया जाना) को समझने की कोशिश कर रहे हैं, तो क्या हुआ? पढ़िए। अगर आप डरे हुए हैं या संकट में हैं, तो आपातकालीन गाइड देखिए। अगर आप इस जानकारी को ऑफ़लाइन रखना चाहते हैं, तो ऑफ़लाइन पुस्तकालय पर जाइए।

कलीसिया की कठिन भाषा के बिना बाइबल की एक सरल व्याख्या।

पाप क्या है?

इसे समझने के लिए आपको कलीसिया के शब्द जानना ज़रूरी नहीं। पाप हम सबको प्रभावित करता है, और बाइबल का संदेश यह नहीं कि आप किसी खास तरह से बुरे हैं। संदेश यह है कि हर इंसान को उसी एक उद्धारकर्ता की ज़रूरत है।

बाइबल “पाप” से क्या मतलब रखती है?

यह पन्ना आपको शर्मिंदा करने के लिए नहीं है। यह समझाने के लिए है कि हम में से हर एक को अनुग्रह की ज़रूरत क्यों है। बाइबल का संदेश यह नहीं है कि “आप बाकी सबसे बुरे हैं।” संदेश यह है कि हम सबने पाप किया है, हम सबको क्षमा की ज़रूरत है, और परमेश्वर ने प्रेम से यीशु के द्वारा अपने पास लौटने का रास्ता बनाया है।

हो सकता है आपने मसीही लोगों को **पाप** शब्द इस्तेमाल करते सुना हो और सोचा हो कि इसका असल में क्या मतलब है। यह कठोर या डरावना धार्मिक शब्द लग सकता है, पर पढ़ना बंद करने से पहले, कृपया एक ज़रूरी बात समझ लीजिए: **यह हम सबके बारे में है। आपको अलग से निशाना नहीं बनाया जा रहा और न ही आपको दोषी ठहराया जा रहा है।**

पाप का मतलब है कि हम परमेश्वर के सिद्ध स्तर तक नहीं पहुँच पाए हैं। कभी पाप हमें बहुत गंभीर लगता है, और कभी छोटा लग सकता है।

क्या आपने कभी झूठ बोला है? कभी कोई ऐसी चीज़ ली है जो आपकी नहीं थी—चाहे च्युइंग गम के एक टुकड़े जितनी छोटी चीज़? क्या आपने कभी रेस्तरां में पानी मँगवाया पर अपने गिलास में बिना पैसे दिए कोल्ड ड्रिंक भर ली?

क्या आपने कभी जानबूझकर अपने माता-पिता की कही बात के विरुद्ध काम किया है? क्या आपने कभी वीडियो गेम, टेलीविज़न, फुटबॉल, खेल के आयोजन, शौक, पैसे, या किसी और चीज़ को अपने जीवन में परमेश्वर, चर्च जाने, या बाइबल पढ़ने में समय बिताने से ज़्यादा ज़रूरी बनने दिया है?

क्या आपने कभी किसी दूसरे व्यक्ति को वासना की नज़र से देखा है? इसलिए जलन महसूस की है कि किसी के पास नया खिलौना, कार, घर, नौकरी, रिश्ता, या कोई और चीज़ थी जो आप चाहते थे? क्या आप कभी किसी पर इतने गुस्सा हुए हैं कि आपने कहा, **“मैं तुमसे नफ़रत करता हूँ”**?

ये रोज़मर्रा के उदाहरण हैं जो हमें समझने में मदद करते हैं कि बाइबल पाप से क्या मतलब रखती है। **हम में से कोई भी दूसरे की ओर उँगली उठाकर यह दिखावा नहीं कर सकता कि उसने कभी पाप नहीं किया।**

“इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।” — रोमियों 3:23 (HOV)

हम हर एक को परमेश्वर की क्षमा की ज़रूरत है। पाप हमें एक पवित्र परमेश्वर से अलग करता है। हम इस अलगाव को केवल और कोशिश करके, काफ़ी अच्छे काम करके, चर्च जाकर, या “बेहतर इंसान” बनकर ठीक नहीं कर सकते।

“और सब बातें परमेश्वर की ओर से हैं, जिस ने मसीह के द्वारा अपने साथ हमारा मेल-मिलाप कर लिया...” — 2

कुरिन्थियों 5:18 (HOV)

“क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।” — रोमियों 6:23 (HOV)

इसीलिए हमें यीशु की ज़रूरत है। परमेश्वर ने लोगों को अपने पास लौटने के रास्ते के बिना नहीं छोड़ा। यीशु मसीह ने अपनी इच्छा से हमारी जगह ली। वह निष्पाप था, फिर भी उसने हमारे लिए अपना प्राण दिया। उसने वह दण्ड उठाया जो हम नहीं चुका सकते थे, क्रूस पर मरा, और फिर जी उठा। यीशु के द्वारा परमेश्वर क्षमा, परमेश्वर के साथ शांति, और परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन उपहार के रूप में देता है।

“और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है।” — प्रकाशितवाक्य 20:14 (HOV)

बाइबल कहती है, **“क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है”** (रोमियों 6:23)। मजदूरी वह है जो कमाई जाती है या जो बकाया होती है। पाप का एक असली नतीजा है: मृत्यु। प्रकाशितवाक्य भी अंतिम न्याय को **“दूसरी मृत्यु”** — आग की झील — कहता है। दूसरे शब्दों में, हम पाप की कीमत खुद चुकाकर फिर परमेश्वर की उपस्थिति में नहीं लौट सकते। अगर हमें उस न्याय को खुद चुकाने के लिए छोड़ दिया जाता, तो हम अपने आपको उससे बचा नहीं सकते थे।

“और उस में कोई अपवित्र वस्तु किसी रीति से प्रवेश न करेगी...” — प्रकाशितवाक्य 21:27 (HOV)

परमेश्वर पिता पूरी तरह पवित्र है। पाप को ऐसे उसकी पवित्र उपस्थिति में नहीं ले जाया जा सकता जैसे उसका कोई महत्व न हो। बाइबल कहती है कि कोई भी अपवित्र वस्तु परमेश्वर के अनन्त नगर में प्रवेश नहीं करेगी, और परमेश्वर की आँखें इतनी शुद्ध हैं कि वह बुराई को स्वीकार नहीं कर सकता। इसलिए हमारा पाप एक ऐसा अलगाव पैदा करता है जिसे हम खुद ठीक नहीं कर सकते।

पाप हमें परमेश्वर से क्यों अलग करता है?

और सच यह है कि हम में से कोई भी केवल एक बार पाप नहीं करता। हम इंसान हैं। हम गलत चुनाव करते हैं, गलत शब्द बोलते हैं, गलत बातें सोचते हैं, और दूसरी चीज़ों को परमेश्वर से आगे रखते हैं। **हम में से हर एक को दया और क्षमा की ज़रूरत है।**

“क्योंकि जो कोई सारी व्यवस्था का पालन करता है, परन्तु एक ही बात में चूक जाए तो वह सब बातों में दोषी ठहरा।” — याकूब 2:10 (HOV)

परमेश्वर से अलग होने और उसकी क्षमा की ज़रूरत पड़ने के लिए आपको दस आज्ञाओं में से हर एक को तोड़ना ज़रूरी नहीं। **पूरे जीवन में केवल एक पाप भी यह दिखाने के लिए काफ़ी है कि हम परमेश्वर के सिद्ध स्तर तक नहीं पहुँच पाए।** उदाहरण के लिए, अगर आपके पूरे जीवन में आपने केवल एक झूठ बोला होता, तब भी आपको परमेश्वर की क्षमा की ज़रूरत होती। बाइबल कहती है कि अगर कोई सारी व्यवस्था का पालन करे पर एक ही बात में चूक जाए, तो वह व्यवस्था के सामने दोषी है।

क्षमा की ज़रूरत के लिए बस एक पाप काफी है

इसीलिए हमें यीशु की ज़रूरत है

परमेश्वर हमसे इतना प्रेम करता है कि उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा। यीशु ने वह सिद्ध जीवन जिया जो हम नहीं जी सकते थे। **उसने कभी पाप नहीं किया।** फिर भी वह अपनी इच्छा से क्रूस पर गया और हमारे पाप का दण्ड अपने ऊपर ले लिया। यीशु हमारी जगह मरा।

पर कहानी क्रूस पर खत्म नहीं हुई। **यीशु मरे हुआं में से जी उठा। उसने मृत्यु को जीत लिया।**

“क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।” — रोमियों 6:23 (HOV)

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” — यूहन्ना 3:16 (HOV)

यीशु के पास आने से पहले आपको सिद्ध बनना ज़रूरी नहीं। परमेश्वर आपसे पहले से प्रेम करता है। आपको पहले अपना जीवन सुधारना, पूरी बाइबल जानना, या हर मसीही शिक्षा को समझना ज़रूरी नहीं। **आपको बस यीशु की ज़रूरत है।**

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

सरल शब्दों में पाप क्या है?

पाप वह चुनना, सोचना या करना है जो परमेश्वर और जो सही है उसके विरुद्ध जाता है। झूठ, चोरी, नफ़रत, जलन और वासना इसके सरल उदाहरण हैं।

क्या एक पाप सचमुच मायने रखता है?

बाइबल सिखाती है कि हर इंसान ने पाप किया है और उसे क्षमा की ज़रूरत है। यीशु की ज़रूरत पड़ने के लिए हमें हर आज्ञा तोड़ना ज़रूरी नहीं।

पाप हमें परमेश्वर से क्यों अलग करता है?

परमेश्वर पवित्र है और उसमें कोई पाप नहीं। यीशु पाप का दण्ड अपने ऊपर लेकर और क्षमा देकर हमें परमेश्वर के पास वापस लाने आया।

मैं आगे कहाँ जाऊँ?

पाप को समझने का मकसद आपको डराना नहीं है। यह समझाता है कि यीशु क्यों आया और उसकी क्षमा की पेशकश क्यों मायने रखती है।

मुझे यीशु की ज़रूरत क्यों है? मेरा उद्धार कैसे हो सकता है?

अलगाव से छुटकारे तक।

मुझे यीशु की ज़रूरत क्यों है?

अगर यह विषय भारी लगता है, तो कृपया संदेश का मूल याद रखिए: **परमेश्वर ने हमें अपने से अलग नहीं छोड़ा।** बाइबल पाप और न्याय की व्याख्या इसलिए करती है कि हम परमेश्वर के छुटकारे की गहराई समझ सकें। यीशु इसलिए आया कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और उसने हमें अपने पास वापस लाने का रास्ता बनाया।

आपको बुलाया जा रहा है, मजबूर नहीं किया जा रहा। यीशु आपको बचाने की पेशकश करता है, पर वह आपको विश्वास करने के लिए मजबूर नहीं करता।

बाइबल का उत्तर यह नहीं कि आपको काफ़ी धार्मिक या काफ़ी सिद्ध बनना होगा। उत्तर यह है कि हम में से कोई भी परमेश्वर से अपने अलगाव को खुद ठीक नहीं कर सकता।

पाप एक ऐसा अलगाव बनाता है जिसे हम खुद ठीक नहीं कर सकते

परमेश्वर पवित्र है। बाइबल सिखाती है कि हम सबने पाप किया है और उसकी महिमा से रहित हैं। इसके लिए हर आज़ा तोड़ना ज़रूरी नहीं। एक पाप का भी मतलब है कि हमें क्षमा की ज़रूरत है, और असल जीवन में हम सब कई बार चूकते हैं।

“इसलिये कि सब ने पाप किया है और परमेश्वर की महिमा से रहित हैं।” — रोमियों 3:23 (HOV)

अच्छे काम, चर्च जाना, पैसा, वादे, या और कोशिश करना उसे मिटा नहीं सकते जो हो चुका है।

पाप की मज़दूरी मृत्यु है

“क्योंकि पाप की मजदूरी तो मृत्यु है, परन्तु परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है।” — रोमियों 6:23 (HOV)

मज़दूरी वह है जो कमाई जाती है या बकाया होती है। बाइबल कहती है कि पाप का एक असली नतीजा है: मृत्यु। प्रकाशितवाक्य आग की झील में अंतिम न्याय को **“दूसरी मृत्यु”** कहता है।

“और मृत्यु और अधोलोक भी आग की झील में डाले गए। यह आग की झील तो दूसरी मृत्यु है।” — प्रकाशितवाक्य 20:14 (HOV)

यीशु ने हमारी जगह ली

परमेश्वर ने लोगों को अपने पास लौटने के रास्ते के बिना नहीं छोड़ा। यीशु मसीह ने बिना पाप के जीवन जिया और अपनी इच्छा से हमारे लिए अपना प्राण दिया। उसने वह दण्ड उठाया जो हम नहीं चुका सकते थे, क्रूस पर मरा, और फिर जी उठा।

“परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।” — रोमियों 5:8 (HOV)

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया...” — यूहन्ना 3:16 (HOV)

इसीलिए हमें यीशु की ज़रूरत है। उसके द्वारा परमेश्वर क्षमा, परमेश्वर के साथ शांति, और परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन उपहार के रूप में देता है।

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

मुझे यीशु की ज़रूरत क्यों है?

हम सब पाप करते हैं और खुद को सिद्ध नहीं बना सकते। यीशु क्रूस पर हमारी जगह मरा और फिर जी उठा ताकि हमें क्षमा मिले और हम परमेश्वर के पास वापस लाए जा सकें।

क्या मैं केवल अच्छा इंसान बनकर परमेश्वर तक पहुँच सकता हूँ?

बाइबल सिखाती है कि उद्धार यीशु के द्वारा एक उपहार है, पर्याप्त अच्छे काम करके कमाया जाने वाला इनाम नहीं।

यीशु ने हमें किससे बचाया?

यीशु पाप से क्षमा देता है, हमें परमेश्वर के साथ रिश्ते में वापस लाता है, और अनन्त जीवन की आशा देता है।

आपको पहले सिद्ध बनना ज़रूरी नहीं

यीशु के पास सच्चाई से आइए। उसे अपने जीवन का सच बताइए। उसने आपके लिए जो किया उस पर भरोसा कीजिए। उद्धार उन लोगों का इनाम नहीं जो काफ़ी अच्छे बन पाए। यह उन लोगों के लिए परमेश्वर का उपहार है जो जानते हैं कि उन्हें उसकी ज़रूरत है।

उद्धार कैसे पाएँयीशु से मिलेंप्रार्थना कैसे करें

यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पाना — उद्धार कैसे पाएँ

आपका उत्तर आपका चुनाव है

परमेश्वर विश्वास कराने के लिए मजबूर नहीं करता। उद्धार एक उपहार के रूप में दिया जाता है, और उपहार को स्वीकार भी किया जा सकता है और ठुकराया भी। यीशु आपको अपने पास आने का न्योता देता है, पर उस पर भरोसा करने का फैसला सच्चा और व्यक्तिगत होना चाहिए।

केवल इसलिए प्रार्थना मत कीजिए कि किसी वेबसाइट ने कहा। अगर आप प्रार्थना करें, तो परमेश्वर से सच्चाई से बात कीजिए क्योंकि आप उसे जानना और यीशु पर भरोसा करना चाहते हैं।

“क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।” – रोमियों 10:13 (HOV)

यूहन्ना 3:16, रोमियों की राह, रोमियों 10:9, और यीशु मसीह पर भरोसा करने की एक सरल व्याख्या।

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

मेरा उद्धार कैसे हो सकता है?

यीशु मसीह पर विश्वास कीजिए, क्रूस पर और अपने जी उठने में उसने जो किया उस पर भरोसा कीजिए, और उससे माँगिए कि वह आपको क्षमा करे और आपका उद्धार करे।

क्या यीशु के मुझे बचाने से पहले मुझे काफ़ी अच्छा होना ज़रूरी है?

नहीं। उद्धार परमेश्वर का उपहार है। आप यीशु के पास इसलिए आते हैं कि आपको उसकी ज़रूरत है, इसलिए नहीं कि आपने खुद को पहले से सिद्ध बना लिया है।

क्या परमेश्वर गंभीर पाप को क्षमा कर सकता है?

बाइबल सिखाती है कि यीशु उन लोगों को क्षमा देता है जो उसकी ओर मुड़ते हैं। अपना पाप सच्चाई से उसके पास लाइए और उसकी दया माँगिए।

क्या परमेश्वर मेरा पाप क्षमा कर सकता है? क्या यीशु मुझे क्षमा कर सकता है?

हाँ। अगर आप **क्षमा** ढूँढ़ रहे हैं, सोच रहे हैं कि आपका **पाप** बहुत बड़ा तो नहीं, या पूछ रहे हैं कि जो आपने किया उसके बाद भी क्या यीशु आपसे **प्रेम** कर सकता है, तो बाइबल का संदेश अनुग्रह और **आशा** का है। उद्धार पहले सिद्ध बनकर कमाया नहीं जाता। यीशु पापियों को बुलाता है कि वे उसके पास आएँ, उस पर भरोसा करें, और परमेश्वर का यह उपहार पाएँ: परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन।

अगर आपको **नरक** का डर है या आप सोच रहे हैं कि **स्वर्ग कैसे जाएँ**, तो यीशु मसीह से शुरू कीजिए। उसने कहा, “मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुंचता।” — यूहन्ना 14:6 (HOV)

मैं उद्धार कैसे पाऊँ और यीशु को कैसे स्वीकार करूँ? — रोमियों की राह

यीशु मसीह के पास आने से पहले आपको बाइबल की हर भविष्यवाणी समझना ज़रूरी नहीं।

“पाप” के बारे में एक छोटी बात: बाइबल इस शब्द का इस्तेमाल हमारे गलत चुनावों और उन तरीकों के लिए करती है जिनसे हम उसके विरुद्ध जाते हैं जिसे परमेश्वर सही कहता है। दस आज्ञाएँ परमेश्वर के स्तर के साफ़ उदाहरण देती हैं। हम सबने गलतियाँ की हैं और सब चूक गए हैं, इसीलिए हम सबको अनुग्रह और क्षमा की ज़रूरत है। यीशु के पास आने से पहले आपको खुद को सिद्ध बनाना ज़रूरी नहीं।

रोमियों 3:23: सबने पाप किया है — हम सब परमेश्वर के स्तर से चूक गए हैं।

रोमियों 6:23: पाप मृत्यु लाता है, पर परमेश्वर का उपहार यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन है।

रोमियों 5:8: परमेश्वर ने हम पर अपना प्रेम प्रगट किया: जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिए मरा।

कृपया इस वादे को थामे रखिए — रोमियों 10:9:

“कि यदि तू अपने मुँह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।” — रोमियों 10:9 (HOV)

रोमियों 10:13: “क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।”

अगर आप यीशु के पास आना चाहते हैं, तो आप जहाँ हैं वहीं से उसके पास आ सकते हैं। उसे सच्चाई से बताइए कि आपको उसकी क्षमा की ज़रूरत है। विश्वास कीजिए कि यीशु मसीह आपके पापों के लिए मरा, गाड़ा गया, और मरे हुओं में से जी उठा। पहले खुद को काफ़ी अच्छा बनाने की कोशिश करने की बजाय उस पर भरोसा रखिए। यीशु मसीह को प्रभु

मानकर अंगीकार कीजिए और उद्धार के लिए उसे पुकारिए।

आपको सही शब्दों की ज़रूरत नहीं। प्रार्थना बस परमेश्वर से सच्चाई से बात करने का तरीका है। यीशु मसीह वही है जो बचाता है, और उद्धार उस पर विश्वास के द्वारा पाया जाने वाला परमेश्वर का उपहार है।

इस गाइड को पढ़ने वाले हर व्यक्ति के लिए एक प्रार्थना

स्वर्ग में हमारे पिता, मैं इस गाइड को पढ़ने वाले हर व्यक्ति के लिए प्रार्थना करता हूँ। उन्हें अपने वचन की समझ दीजिए और जानने में मदद कीजिए कि क्या सच है। उन्हें डर, धोखे, खतरे और निराशा से बचाइए। उन्हें वह दीजिए जिसकी उन्हें ज़रूरत है और कमज़ोर, किसी को खोने के बाद दुखी, घायल और अकेले लोगों को मदद और दया से घेर लीजिए।

सबसे बढ़कर, उन्हें यीशु मसीह के प्रेम को जानने में मदद कीजिए। अगर इसे पढ़ने वाला अब तक यीशु को नहीं जानता, तो उसका दिल खोलिए कि वह समझे कि यीशु उसके पापों के लिए मरा, गाड़ा गया, और फिर जी उठा। उसे उसकी ओर मुड़ने, उस पर भरोसा करने, यीशु को प्रभु मानकर अंगीकार करने और उद्धारकर्ता के रूप में उसे ग्रहण करने में मदद कीजिए।

प्रभु यीशु, जब वे डरे हों तब उन्हें हिम्मत दीजिए, जब बोझ से दबे हों तब शांति, जब किसी को खोने के बाद दुखी हों तब सांत्वना, जब उलझन में हों तब अच्छी समझ, और आपके प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की शक्ति दीजिए। उन्हें पवित्र शास्त्र और भरोसेमंद विश्वासियों तक पहुँचाइए। उन्हें याद दिलाइए कि अंधकार नहीं जीतता: यीशु मसीह जीतता है। क्रूस, खाली कब्र, आपकी दया, क्षमा और परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन के लिए आपका धन्यवाद। यीशु मसीह के नाम से, आमीन।

यूहन्ना 3:16 — “नाश न हो” और दूसरी मृत्यु

“क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।” — यूहन्ना 3:16 (HOV)

यूहन्ना 3:16 दो अंत की तुलना करता है: **नाश होना** और **अनन्त जीवन**। यीशु इसलिए आया कि जो उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, बल्कि परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन पाए।

आगे का पवित्र शास्त्र हमें ऐसे शब्द देता है जो उनके अंतिम अंत को समझने में मदद करते हैं जो मसीह में नहीं हैं।

प्रकाशितवाक्य 20:14 आग की झील को **“दूसरी मृत्यु”** कहता है। प्रकाशितवाक्य 21:8 फिर आग की झील को **“दूसरी मृत्यु”** बताता है। इस अर्थ में, यूहन्ना 3:16 की नाश होने की चेतावनी, अंतिम न्याय और दूसरी मृत्यु के बारे में बाइबल के बाद के प्रकाशन से मेल खाती है।

“नाश” का मतलब यह नहीं कि कोई इंसान परमेश्वर के लिए कभी मायने नहीं रखता था। यूहन्ना 3:16 परमेश्वर के बहुत अनोखे प्रेम से शुरू होता है: **परमेश्वर ने अपना पुत्र दे दिया**। चेतावनी के साथ एक खुला वादा भी जुड़ा है: **जो कोई उस पर विश्वास करे वह अनन्त जीवन पाता है**।

मुझे आशा है आप इन शब्दों में प्रेम सुनेंगे।

यूहन्ना 3:16 परमेश्वर के प्रेम से शुरू होता है और हर उस व्यक्ति को अनन्त जीवन का वादा करता है जो उसके पुत्र पर विश्वास करे। रोमियों 10:9 एक सरल उत्तर देता है: यीशु को प्रभु मानकर अंगीकार कीजिए और अपने मन से विश्वास कीजिए कि परमेश्वर ने उसे मरे हुए में से जिलाया, तो आपका उद्धार होगा। आप जहाँ हैं वहीं उससे बात कर सकते हैं।

आपको किन्हीं खास शब्दों की ज़रूरत नहीं।

प्रार्थना कैसे करें

प्रार्थना और कुछ नहीं, बस यीशु से ऐसे बात करना है जैसे वह आपका सबसे अच्छा दोस्त हो। आपको धार्मिक सुनाई देना ज़रूरी नहीं। आपको सही शब्द जानना ज़रूरी नहीं। आप बस उससे बात कर सकते हैं।

बस उससे बात कीजिए

यीशु आपको पहले से जानता है। वह जानता है कि आपके जीवन में क्या हुआ है, आपने कौन-से फैसले लिए हैं, किन बातों पर आपको गर्व है, और किन बातों को आप बदलना चाहेंगे। आपको इनमें से कुछ भी उससे छिपाने की ज़रूरत नहीं।

क्या आपने कोई गलत फैसला किया? क्या आपने पानी के पैसे दिए थे पर गिलास में कोल्ड ड्रिंक भर ली? क्या आपको इसलिए जलन हो रही है कि किसी और को तरक्की मिली, कोई रिश्ता मिला, घर खरीद लिया, या उसके पास वह है जो आप चाहते थे? **यीशु को उसके बारे में बताइए।**

जो हुआ उसके बारे में उससे बात कीजिए। उसे बताइए कि आप क्या सोच रहे थे। जब आप गुस्से में, डरे हुए, उलझन में, अकेले, शर्मिंदा, आभारी या खुश हों, तो उसे बताइए। उससे माँगिए कि वह आपको अपना अगला फैसला लेने में मदद करे।

प्रार्थना विस्तृत हो सकती है, पर कुछ सबसे शक्तिशाली प्रार्थनाएँ बहुत सरल होती हैं:

“यीशु, मुझे आपकी ज़रूरत है।”

“यीशु, मेरी मदद कीजिए।”

“यीशु, यह फैसला लेने में मेरी मदद कीजिए।”

“यीशु, मैं गलत था। कृपया मुझे क्षमा कीजिए।”

“यीशु, मैं यह अकेले नहीं कर सकता।”

“यीशु, मेरे साथ रहने के लिए धन्यवाद।”

“और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है।” — 1 पतरस 5:7 (HOV)

हम किससे प्रार्थना करते हैं?

जब आप मसीही विश्वास में नए हों, तो यह उलझन भरा हो सकता है। आप मसीही लोगों को **परमेश्वर पिता, पुत्र यीशु और पवित्र आत्मा** के बारे में बात करते सुन सकते हैं। क्या ये तीन अलग-अलग परमेश्वर हैं? **नहीं।** मसीही लोग एक ही परमेश्वर को मानते हैं।

त्रिएकता, बहुत सरल भाषा में

बाइबल एक परमेश्वर को प्रगट करती है जो पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के रूप में जाना जाता है। पिता परमेश्वर है। पुत्र यीशु परमेश्वर है। पवित्र आत्मा परमेश्वर है। फिर भी तीन परमेश्वर नहीं हैं—परमेश्वर एक ही है। वे अलग-अलग व्यक्ति हैं, जो एक सच्चे परमेश्वर के रूप में पूरी तरह एक हैं।

प्रार्थना करने से पहले आपको त्रिएकता के बारे में सब कुछ समझना ज़रूरी नहीं है। मसीही लोगों ने सदियों तक एक ऐसे सत्य का वर्णन करने की कोशिश की है जो हमारे मन की पूरी पकड़ से बड़ा है।

“प्रभु यीशु मसीह का अनुग्रह, और परमेश्वर का प्रेम, और पवित्र आत्मा की सहभागिता तुम सब के साथ होती रहे।” — 2 कुरिन्थियों 13:14 (HOV)

तो मैं किससे बात करूँ?

यीशु ने अपने चेलों को स्वर्ग में हमारे पिता से प्रार्थना करना सिखाया। मसीही लोग यीशु के द्वारा पिता के पास आते हैं, और पवित्र आत्मा हमें प्रार्थना करने में मदद करता है। यीशु से सीधे बात करना भी बिल्कुल स्वाभाविक है, जैसे नए नियम में लोग करते थे।

अगर आप बस इतना कह सकते हैं, **“यीशु, मेरी मदद कीजिए,”** तो वही कह दीजिए। शब्दों को लेकर अनिश्चितता को परमेश्वर से बात करने से मत रोकने दीजिए।

“हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है; तेरा नाम पवित्र माना जाए।” — मत्ती 6:9 (HOV)

“इसी रीति से आत्मा भी हमारी दुर्बलता में सहायता करता है, क्योंकि हम नहीं जानते कि प्रार्थना किस रीति से करना चाहिए...” — रोमियों 8:26 (HOV)

मसीही लोग “यीशु के नाम से” प्रार्थना क्यों करते हैं?

प्रार्थना को **“यीशु के नाम से”** पर खत्म करना कोई जादुई वाक्य नहीं है। यह हमें याद दिलाता है कि हम परमेश्वर के पास यीशु के कारण आते हैं—इसलिए नहीं कि हमने उसके पास आने का अधिकार कमाया है या हमने सिद्ध जीवन जिया है।

यीशु पिता तक पहुँचने का हमारा मार्ग है। उसके नाम से प्रार्थना करने का मतलब है कि हम उस पर भरोसा कर रहे हैं और वह माँग रहे हैं जो उसके स्वभाव और उसकी इच्छा के अनुसार हो।

“मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँचता।” — यूहन्ना 14:6 (HOV)

“और जो कुछ तुम मेरे नाम से मांगोगे, वही मैं करूँगा; ताकि पिता बेटे में महिमा पाए।” — यूहन्ना 14:13 (HOV)

उद्धार पाने की एक बहुत सरल प्रार्थना

कोई जादुई शब्द नहीं हैं जो आपको बचाते हैं। **यीशु आपको बचाता है।** प्रार्थना वह तरीका है जिससे आप उसे सच्चाई से बता सकते हैं कि आप क्या मानते हैं और उससे क्षमा माँग सकते हैं। अगर आप यीशु पर भरोसा करने के लिए तैयार हैं, तो आपकी प्रार्थना बहुत सरल हो सकती है:

यीशु, मैंने बुरे फैसले और गलत चुनाव किए हैं, और आप उनके बारे में पहले से जानते हैं। कृपया मुझे क्षमा कीजिए।

मैं विश्वास करता हूँ कि आप क्रूस पर मेरे लिए मरे, और मैं विश्वास करता हूँ कि परमेश्वर ने आपको मरे हुआओं में से जिलाया।

मैं अपने पाप आपके सामने मान लेता हूँ। मैं अपना विश्वास और भरोसा आप पर रखता हूँ।

मैं चाहता हूँ कि आप मेरे जीवन भर मेरे साथ रहें, और जब मैं मरूँ तो मैं स्वर्ग में आपके साथ रहूँ।

कृपया आपको जानने, आपके पीछे चलने, और वह जीवन जीने में मेरी मदद कीजिए जो आप मुझसे जिलवाना चाहते हैं।

यीशु के नाम से, आमीन।

प्रार्थना अपने आप में कोई सूत्र या सौदा नहीं है। बाइबल हमें यीशु मसीह में सच्चे विश्वास की ओर ले जाती है—उस पर विश्वास करना, उसकी ओर मुड़ना, और उसे पुकारना।

“कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुआओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।” — रोमियों 10:9 (HOV)

“क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।” — रोमियों 10:13 (HOV)

“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।” — 1 यूहन्ना 1:9 (HOV)

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

मैं परमेश्वर से कैसे बात करूँ?

उससे सच्चाई से बात कीजिए, वैसे ही जैसे आप किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बात करते हैं। आप उसे बता सकते हैं कि आपको किस बात का डर है, आपको क्या चाहिए, और आप किस बात के लिए धन्यवादी हैं।

क्या प्रार्थना का कुछ खास सुनाई देना ज़रूरी है?

नहीं। एक सरल प्रार्थना भी शक्तिशाली हो सकती है। कभी-कभी आप बस इतना कह पाते हैं, “यीशु, कृपया मेरी मदद कीजिए।”

मसीही लोग किससे प्रार्थना करते हैं?

मसीही लोग परमेश्वर पिता से, यीशु के द्वारा, पवित्र आत्मा की मदद से प्रार्थना करते हैं। पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा एक ही परमेश्वर हैं।

कल मैं क्या कहूँ?

उससे बात करते रहिए। जब कुछ अच्छा हो तो उसे धन्यवाद दीजिए। कठिन फैसले से पहले अच्छी समझ माँगिए। जब आप चूक जाएँ तो उसे बताइए। क्षमा माँगिए। जिससे आप प्रेम करते हैं उसके लिए प्रार्थना कीजिए। जब आप डरे हों तो उसे बताइए। जब आपके पास शब्द न हों तो उसके साथ चुपचाप बैठिए।

आप अपनी कार में, बिस्तर में, काम पर, चलते हुए, अस्पताल के कमरे में, या रसोई की मेज़ पर अकेले बैठे हुए प्रार्थना कर सकते हैं। परमेश्वर से बात करने के लिए आपको चर्च की इमारत की ज़रूरत नहीं।

आपको यीशु को प्रभावित करने की ज़रूरत नहीं। बस उसके साथ सच्चे रहिए। जो शब्द आपके पास हैं, उन्हीं से शुरू कीजिए—चाहे आपके पास केवल यही शब्द हों, “यीशु, मुझे आपकी ज़रूरत है।”

यीशु कौन है, इसके बारे में और जानें या उद्धार और क्षमा के बारे में और पढ़ें।

विश्वास कोई मुश्किल कलीसियाई शब्द नहीं है।

विश्वास क्या है?

विश्वास को ज़बरदस्ती नहीं कराया जा सकता। अँधेरे में खड़े बच्चे की तस्वीर में, भरोसेमंद आवाज़ कह सकती है, “कूद जाओ। मैं तुम्हें पकड़ लूँगा,” फिर भी कूदना है या नहीं, यह बच्चा ही चुनता है। उसी तरह यीशु आपको अपने ऊपर भरोसा करने का न्योता देता है। वह आपको मजबूर नहीं करता। विश्वास का मतलब है उस पर भरोसा रखना चुनना, तब भी जब आप आगे का सब कुछ नहीं देख सकते।

विश्वास का मतलब है यीशु पर भरोसा करना, तब भी जब आप न देख पाएँ कि आगे क्या होगा।

विश्वास की एक सरल तस्वीर

सोचिए कि एक छोटा बच्चा अँधेरे में सीढ़ियों के ऊपर खड़ा है। उसे नहीं दिखता कि नीचे क्या है।

तभी बच्चा किसी ऐसे की जानी-पहचानी आवाज़ सुनता है जिसे वह जानता है, जिससे प्रेम करता है और जिस पर भरोसा करता है। वह कहता है, “कूद जाओ। मैं यहीं हूँ। मैं तुम्हें पकड़ लूँगा।”

बच्चे को उस व्यक्ति की बाँहें नहीं दिखतीं। उसे यह भी ठीक-ठीक नहीं दिखता कि वह कहाँ गिरेगा। पर वह आवाज़ पहचानता है। वह जानता है कि यह व्यक्ति उससे प्रेम करता है। वह जानता है कि यह व्यक्ति पहले भी भरोसेमंद रहा है। और वह इस वादे पर विश्वास करता है: “मैं तुम्हें पकड़ लूँगा।”

तो बच्चा कूद जाता है।

विश्वास की यही एक सरल तस्वीर है।

यीशु पर विश्वास उस पर भरोसा करना है जिसने वादा किया है

यीशु पर विश्वास रखने का मतलब यह नहीं कि आप सब कुछ समझते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि आपको कभी डर नहीं लगेगा। इसका मतलब यह नहीं कि आपके मन में कभी सवाल नहीं होंगे, या आपको हमेशा पता होगा कि आगे क्या होने वाला है।

विश्वास का मतलब है यीशु पर इतना भरोसा करना कि आप खुद को उसके हाथों में सौंप दें, तब भी जब आप उसकी बाँहों को पकड़ने के लिए तैयार नहीं देख सकते।

“अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है।” — इब्रानियों 11:1 (HOV)

हो सकता है आप यीशु को अपने सामने खड़ा हुआ अपनी आँखों से न देख पाएँ। पर आप बाइबल के द्वारा जान सकते हैं कि वह कौन है, देख सकते हैं कि उसने क्या वादे किए हैं, और उस पर भरोसा करना चुन सकते हैं।

विश्वास का मतलब यह दिखावा करना नहीं कि सीढ़ी अँधेरी नहीं है। विश्वास उस पर भरोसा करना है जो अँधेरे में आपके साथ है।

विश्वास कैसा सुनाई देता है?

कभी-कभी विश्वास एक बहुत सरल प्रार्थना होता है:

“यीशु, मैं नहीं देख सकता कि क्या होने वाला है। मैं यह सब समझ नहीं पाता। हो सकता है मैं डरा हुआ हूँ, पर मैं विश्वास करता हूँ कि आप मुझसे प्रेम करते हैं। मैं खुद को आपके हाथों में सौंपता हूँ। कृपया मेरी अगुवाई कीजिए, मेरी मदद कीजिए, और मुझे थामे रखिए।”

आपको सही शब्दों की ज़रूरत नहीं है। आपको पूरी समझ की ज़रूरत नहीं है। आप यीशु पर भरोसा कर रहे हैं, सब कुछ समझा पाने की अपनी योग्यता पर नहीं।

अगर मेरा विश्वास छोटा लगे तो?

यीशु ने राई के दाने जितने छोटे विश्वास की बात कही। एक भरोसेमंद उद्धारकर्ता पर रखा गया छोटा विश्वास भी विश्वास ही है।

“यदि तुम्हारा विश्वास राई के दाने के बराबर हो...” — मत्ती 17:20 (HOV)

यीशु के पास आने से पहले आपको कोई बहुत बड़ा विश्वास पैदा करना ज़रूरी नहीं है। जितना विश्वास आपके पास है, उसी से शुरू कीजिए। उसे अपने संदेह, अपने डर और अपने सवाल बताइए। उससे माँगिए कि वह आपको अपने ऊपर भरोसा करना सिखाए।

विश्वास केवल तथ्य जानने से बढ़कर है

आप यीशु के बारे में तथ्य जान सकते हैं और फिर भी उस पर भरोसा न करें। विश्वास एक कदम और आगे जाता है। इसका मतलब है उस पर व्यक्तिगत रूप से निर्भर होना।

यह इस फ़र्क जैसा है कि आप जानते हैं कि कोई व्यक्ति आपको पकड़ सकता है, और आप सचमुच इसलिए कूद जाते हैं क्योंकि आप भरोसा करते हैं कि वह पकड़ेगा।

मसीही विश्वास स्वयं विश्वास पर विश्वास नहीं है। हमारे विश्वास का आधार यीशु मसीह है।

“क्योंकि विश्वास के द्वारा अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है; और यह तुम्हारी ओर से नहीं, वरन परमेश्वर का दान है।”
— इफिसियों 2:8 (HOV)

विश्वास से उद्धार कमाया नहीं जाता। उद्धार परमेश्वर का उपहार है। विश्वास यीशु मसीह पर भरोसा करके उस उपहार को स्वीकार करना है।

आप ठीक वहीं से शुरू कर सकते हैं जहाँ आप हैं

अगर आपको पक्का नहीं कि आपका विश्वास काफ़ी मज़बूत है या नहीं, तो यीशु से सच्चाई से बात करके शुरू कीजिए। आप कह सकते हैं, “यीशु, मैं आप पर भरोसा करना चाहता हूँ। मुझे अपने ऊपर भरोसा करना सिखाइए।”

आपको पूरी सीढ़ी देखना ज़रूरी नहीं है। आपको बस उस पर भरोसा करना है जो आपको बुला रहा है।

यीशु से मिलें • प्रार्थना करना सीखें • उद्धार पाने के बारे में जानें • आत्मिक बुराई से लड़ाई और परमेश्वर के हथियारों के बारे में जानें

आपने यीशु पर भरोसा किया। अब आगे क्या?

मसीही बनने के बाद क्या होता है?

यीशु के पीछे चलना एक रिश्ते की शुरुआत है, किसी सूची के पूरा होने का अंत नहीं। आप सीखते रहेंगे, बढ़ते रहेंगे, सवाल पूछते रहेंगे, और कभी-कभी लड़खड़ाएँगे भी। बस उनके पास लौटते रहिए।

यीशु से बात कीजिए

प्रार्थना का लंबा या सजा-सँवरा होना ज़रूरी नहीं है। उन्हें बताइए कि आज क्या हुआ, आपको किस बात का डर है, आप किस बात के लिए धन्यवादी हैं, और कहाँ आपको मदद चाहिए।

प्रार्थना करना सीखें →

बाइबल पढ़िए

किसी एक सुसमाचार से शुरू कीजिए - मत्ती, मरकुस, लूका या यूहन्ना - और जानिए कि यीशु ने क्या कहा और क्या किया। धीरे-धीरे पढ़िए। परमेश्वर से माँगिए कि वह आपको समझने में मदद करे।

बाइबल पढ़ने में मदद लें →

उन पर भरोसा करना सीखिए

जैसे-जैसे आप यीशु को और अच्छे से जानते हैं, विश्वास बढ़ता जाता है। अगला कदम उठाने से पहले आपके पास सारे उत्तर होना ज़रूरी नहीं है।

विश्वास क्या है? →

बढ़ोतरी की आशा रखिए, अचानक सिद्धता की नहीं

मसीही लोग भी गलतियाँ कर सकते हैं। जब आपसे पाप हो जाए, तो यीशु से दूर मत भागिए। उसे मान लीजिए, उनसे क्षमा पाइए, सीखिए और उनके पीछे चलते रहिए।

विश्वासी के बपतिस्मा के द्वारा यीशु के पीछे चलिए

जब आप यीशु पर भरोसा कर लेते हैं और उद्धार पा लेते हैं, तो बपतिस्मा यीशु के पीछे चलने का एक सुंदर अगला कदम है। यीशु ने भी बपतिस्मा लिया था, और उन्होंने अपने चेलों से कहा कि लोगों को चेला बनाओ और उन्हें बपतिस्मा दो। विश्वासी का बपतिस्मा उद्धार को कमाता नहीं और न ही आपको परमेश्वर के प्रेम के योग्य बनाता है। यह आपके दिल में पहले से मौजूद **विश्वास को सबके सामने दिखाने का तरीका** है - यह कहने का एक ढंग कि, “मैं यीशु का हूँ, और मैं उनके पीछे चलना चाहता हूँ।”

“इसलिये तुम जाकर सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्हें पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो।” - मत्ती 28:19 (HOV)

यदि आप कर सकें, तो किसी भरोसेमंद, बाइबल को मानने वाली कलीसिया से, या किसी ऐसे भरोसेमंद मसीही से जो लंबे समय से यीशु के पीछे चल रहा है, बपतिस्मा और उसके अर्थ के बारे में बात कीजिए।

दूसरे मसीही लोगों को ढूँढ़िए और एक-दूसरे का सहारा बनिए

यीशु के पीछे चलना कभी इसलिए नहीं बना था कि आप उसे बिल्कुल अकेले निभाएँ। जब सुरक्षित और संभव हो, तो किसी बाइबल को मानने वाली कलीसिया या ऐसे भरोसेमंद मसीही लोगों को ढूँढ़िए जो यीशु से प्रेम करते हैं और पवित्र शास्त्र को गंभीरता से लेते हैं। एक-दूसरे के लिए प्रार्थना कीजिए, एक-दूसरे को हिम्मत दीजिए, साथ मिलकर सीखिए, कठिन दिनों में एक-दूसरे की मदद कीजिए, और जब कोई निराश हो तो उसे परमेश्वर का सत्य याद दिलाइए।

“और प्रेम, और भले कामों में उस्काने के लिये एक दूसरे की चिन्ता किया करें। और एक दूसरे के साथ इकट्ठा होना न छोड़ें...” - इब्रानियों 10:24-25 (HOV)

आप सीखते हुए भी किसी और को हिम्मत दे सकते हैं। दूसरे मसीही लोगों के साथ रहने का मतलब यह नहीं कि आपको सब कुछ समझ आ चुका हो। इसका मतलब है यीशु के साथ मिलकर चलना।

आत्मिक युद्ध को समझिए

बाइबल कहती है कि विश्वासियों को परीक्षा और आत्मिक हमलों का सामना करना पड़ेगा। आपको डर में जीने की ज़रूरत नहीं है। परमेश्वर के हथियारों के बारे में सीखिए और सत्य, विश्वास, पवित्र शास्त्र, प्रार्थना और शांति के सुसमाचार में स्थिर रहिए।

आत्मिक युद्ध के बारे में जानें →

जब आप गिर जाएँ, तो यीशु के पास लौट आइए

“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।” — 1 यूहन्ना 1:9 (HOV)

यीशु के साथ आपका रिश्ता इस दिखावे पर नहीं टिका कि आप कभी संघर्ष नहीं करते। उनसे बात करते रहिए, उनका वचन पढ़ते रहिए, और उनके पीछे चलना सीखते रहिए।

आपके अगले आसान कदम

आज प्रार्थना कीजिए। यीशु से अपने शब्दों में बात कीजिए।

थोड़ा पवित्र शास्त्र पढ़िए। अगर समझ न आए कि कहाँ से शुरू करें, तो यूहन्ना के सुसमाचार से शुरू कीजिए।

एक सवाल पूछिए। कोई ऐसी बात लिख लीजिए जो आप समझना चाहते हैं, और उसका बाइबल में उत्तर ढूँढ़िए।

विश्वासी के बपतिस्मा के बारे में पूछिए। यदि आपने यीशु पर भरोसा किया है, तो किसी भरोसेमंद, बाइबल को मानने वाली कलीसिया से, या किसी ऐसे भरोसेमंद मसीही से जो लंबे समय से यीशु के पीछे चल रहा है, बात कीजिए कि बपतिस्मा लेकर उनके उदाहरण पर कैसे चलें।

दूसरे मसीही लोगों को ढूँढ़िए। साथ मिलकर प्रार्थना कीजिए, साथ मिलकर सीखिए, एक-दूसरे को हिम्मत दीजिए, और अच्छे और कठिन, दोनों तरह के दिनों में एक-दूसरे का सहारा बनिए।

आगे बढ़ते रहिए। आपको सब कुछ एक ही दिन में सीखना ज़रूरी नहीं है।

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

मसीही बनने के बाद मुझे क्या करना चाहिए?

प्रार्थना कीजिए, बाइबल पढ़िए, यीशु के बारे में जानिए, और उनकी शिक्षा पर एक-एक कदम करके चलना शुरू कीजिए।

क्या मुझे बपतिस्मा लेना चाहिए?

विश्वासी का बपतिस्मा सबके सामने यह दिखाने का तरीका है कि आपने यीशु पर भरोसा किया है। इससे उद्धार कमाया नहीं जाता; यह बाहर से वही दिखाता है जो आप दिल में मानते हैं।

क्या मुझे दूसरे मसीही लोगों की ज़रूरत है?

जी हाँ। दूसरे विश्वासी आपके साथ प्रार्थना कर सकते हैं, आपको सिखा सकते हैं, हिम्मत दे सकते हैं, और यीशु के पीछे चलते रहने में आपकी मदद कर सकते हैं। ऐसे लोगों को चुनिए जिनका जीवन आपको यीशु की ओर ले जाए।

प्रार्थना की डायरी या “परमेश्वर का मर्तबान” रखिए

एक साधारण डायरी – या पर्चियों से भरा कोई खास मर्तबान या “परमेश्वर का मर्तबान” – आपको याद रखने में मदद कर सकता है कि आपने किस बात के लिए प्रार्थना की, और यह देखने में कि परमेश्वर आपके जीवन में कैसे काम करता रहा है।

अपनी प्रार्थना की बातें तारीख के साथ लिखिए। जब आपको कोई उत्तर दिखे, तो लिख लीजिए कि क्या हुआ और कब हुआ। लगभग महीने में एक बार अपनी लिखी बातों को देखिए। गौर कीजिए कि कौन-सी प्रार्थनाओं का उत्तर मिल चुका है, किनका इंतज़ार अब भी है, और क्या उत्तर किसी ऐसे तरीके से आया जिसकी आपने आशा नहीं की थी।

याद रखिए, उत्तर **हाँ, ना, अभी नहीं, या आपकी माँगी हुई बात से कुछ अलग हो सकता है**। प्रार्थना का मतलब वह सब पा लेना नहीं है जो हम चाहते हैं। यह परमेश्वर से बात करना, उन पर भरोसा करना सीखना, और उनकी देखभाल और उन तरीकों को पहचानना है जिनसे उन्होंने आपकी मदद की है।

लिखिए कि आज आपने परमेश्वर को कैसे देखा

अपनी प्रार्थना की बातों के साथ, दिन में परमेश्वर को जिन एक-दो तरीकों से आपने महसूस किया, वे भी लिखिए। शायद उनकी सृष्टि की सुंदरता – सूर्योदय, पहाड़, फूल, जानवर, बारिश या तारे। शायद कोई बाइबल का वचन ठीक उसी बात पर बोला जिससे आप गुज़र रहे थे। शायद किसी ने ठीक सही समय पर आपको हिम्मत दी।

कभी-कभी कुछ अनोखा हो जाता है जिससे आप सोचने लगते हैं कि क्या परमेश्वर आपकी रक्षा या अगुवाई कर रहा था। शायद आप किसी दुर्घटना से बाल-बाल बचे। शायद आप देर हो जाने से परेशान थे, पर बाद में पता चला कि जल्दी पहुँचने पर आप किसी अनहोनी के बीच फँस सकते थे। या शायद कुछ ऐसा हुआ जो इतना अनोखा था कि आप उसे चमत्कार ही कह सकते थे।

उन पलों को भी लिख लीजिए। आपको यह तय करना ज़रूरी नहीं कि हर संयोग चमत्कार था या आप ठीक-ठीक समझ गए कि परमेश्वर क्या कर रहा था। कभी-कभी हम बस नहीं जानते। आप लिख सकते हैं, *“मुझे नहीं पता कि यह परमेश्वर था या नहीं, पर इसने मुझे रुककर उन्हें धन्यवाद कहने पर मजबूर किया।”*

साथ ही उस दिन आपसे बात करने वाला **बाइबल का कोई वचन** और एक वाक्य लिखिए कि वह क्यों ज़रूरी था। महीनों या सालों बाद आपकी डायरी प्रार्थनाओं, कठिन दौरों जिनसे परमेश्वर ने आपको निकाला, अनपेक्षित उत्तरों, सुरक्षा के पलों, हिम्मत देने वाले पवित्र शास्त्र, और उन साधारण दिनों का एक सुंदर रिकॉर्ड बन सकती है जब उनकी सृष्टि ने आपको याद दिलाया कि वह पास है।

“आकाश ईश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।” –

भजन संहिता 19:1 (HOV)

लक्ष्य यह नहीं है कि आप हर जगह घबराकर संकेत ढूँढ़ते फिरें। लक्ष्य बस इतना है कि आप धीमे हों, ध्यान दें, धन्यवादी रहें, और परमेश्वर की भलाई को अनोखे पलों में भी और बहुत आम पलों में भी पहचानना सीखें।

आप यीशु के हैं। आपको डरकर जीना ज़रूरी नहीं।

शैतान और परमेश्वर के हथियारों को समझना

जब आप यीशु के पीछे चलना शुरू करते हैं, तो बाइबल कहती है कि एक असली आत्मिक शत्रु है जो लोगों को परखना, दोष लगाना, निराश करना, धोखा देना और परमेश्वर से दूर खींचना चाहता है। पर शैतान **परमेश्वर के बराबर नहीं** है, वह सर्वशक्तिमान नहीं है, और उसकी अंतिम हार पहले से निश्चित है।

शैतान कौन है?

बाइबल इस शत्रु के लिए कई नाम और वर्णन इस्तेमाल करती है। उसे **शैतान** कहा गया है, जिसका अर्थ है विरोधी; **इब्लीस**, जिसका अर्थ है निंदक या दोष लगाने वाला; **परखने वाला**; **दुष्ट**; **बड़ा अजगर**; और वह **पुराना साँप**।

“और वह बड़ा अजगर अर्थात् वही पुराना साँप, जो इब्लीस और शैतान कहलाता है, और सारे संसार का भरमाने वाला है, पृथ्वी पर गिरा दिया गया...” — प्रकाशितवाक्य 12:9 (HOV)

आप शैतान को **लूसीफ़र** कहा जाता भी सुन सकते हैं। किंग जेम्स बाइबल यशायाह 14:12 में “लूसीफ़र” शब्द इस्तेमाल करती है। उस अध्याय में यशायाह 14 बाबुल के राजा के विरुद्ध बोल रहा है। बहुत से मसीही वहाँ बताए गए घमंडी पतन को शैतान की बगावत की तस्वीर भी समझते आए हैं। क्योंकि मसीही लोग इस पर एकमत नहीं हैं कि यशायाह 14 और यहजकेल 28 ठीक-ठीक कैसे लागू होते हैं, यह गाइड यह दिखावा नहीं करती कि ये अंश जितना कहते हैं उससे ज़्यादा कहते हैं। पवित्र शास्त्र साफ़ तौर पर यह कहता है कि शैतान एक सृजा हुआ आत्मिक प्राणी है जिसने परमेश्वर के विरुद्ध बगावत की और जो परमेश्वर के उद्देश्यों का विरोधी है।

यहजकेल 28 हमें क्या दिखाता है?

यहजकेल 28:12-17 सोर के राजा से कहा गया था, पर बहुत से मसीही इसकी भाषा में शैतान के गिरने से पहले की तस्वीर भी देखते हैं। यह अंश अदन से जुड़े किसी व्यक्ति, बड़ी बुद्धि और सुंदरता, और **“छाया करने वाले अभिषिक्त करूब”** का वर्णन करता है। यह कहता है कि उसे परमेश्वर ने बनाया था और वह अपने चालचलन में निर्दोष था, जब तक उसमें पाप न पाया गया।

“तू तो उत्तम से भी उत्तम है; तू बुद्धि से भरपूर और सर्वांग सुन्दर है।” — यहजकेल 28:12 (HOV)

“तू छाया करने वाला अभिषिक्त करूब था... जिस दिन से तू सिरजा गया, उस दिन से जब तक तुझ में कुटिलता न पाई गई, तब तक तू अपने सारे चालचलन में निर्दोष रहा।” — यहजकेल 28:14-15 (HOV)

कीमती पत्थर और परमेश्वर के समान बनने की इच्छा

किंग जेम्स बाइबल में यहजेकेल 28:13 इस सुंदर आकृति से जुड़े नौ तरह के कीमती पत्थरों के नाम लेता है। कुछ बाइबल शिक्षक इन नौ पत्थरों की तुलना प्रकाशितवाक्य 21:19-20 में नए यरूशलेम के बारह नींव के पत्थरों से करते हैं, जो परमेश्वर की महिमा से भरा नगर है। वे एक ऐसे सृजे हुए प्राणी की तस्वीर देखते हैं जो परमेश्वर की महिमा की नकल करना चाहता था पर हमेशा चूक जाता है।

यह एक दिलचस्प तस्वीर है, पर हमें इसे सावधानी से कहना चाहिए। प्रकाशितवाक्य 21 के बारह पत्थर नए यरूशलेम की नींव का वर्णन करते हैं, स्वयं परमेश्वर का नहीं। जब प्रकाशितवाक्य सिंहासन पर बैठने वाले का सीधे वर्णन करता है, तो वह यशब, माणिक्य और मरकत जैसे इंद्रधनुष की सुंदरता का प्रयोग करता है (प्रकाशितवाक्य 4:3)। बाइबल सीधे यह नहीं कहती, “लूसीफ़र के पास नौ पत्थर इसलिए थे कि वह परमेश्वर के बारह की नकल कर रहा था।” वह तुलना एक व्याख्या है, पवित्र शास्त्र में पाया जाने वाला वाक्य नहीं।

बाइबल जो बात बहुत साफ़ कहती है वह यह है कि उसमें घमंड बढ़ा। यशायाह उसके घमंडी शब्द दर्ज करता है, “मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।” तो मुख्य सत्य सरल है: एक सृजा हुआ प्राणी वह स्थान और महिमा चाहता था जो केवल परमेश्वर की है। वह कितना भी सुंदर या शक्तिशाली रहा हो, वह फिर भी परमेश्वर का बनाया हुआ था और कभी परमेश्वर नहीं बन सकता था।

“मैं मेघों से ऊंचे ऊंचे स्थानों के ऊपर चढ़ूंगा, मैं परमप्रधान के तुल्य हो जाऊंगा।” — यशायाह 14:14 (HOV)

मसीही लोग इस पर एकमत नहीं हैं कि यहजेकेल 28 और यशायाह 14 सीधे शैतान का वर्णन कैसे करते हैं, इसलिए यह गाइड हर ब्योरे को निश्चित बताकर नहीं रखेगी। पर साथ मिलकर ये अंश बहुत से मसीहियों को सुंदरता, घमंड, बगावत, और एक सृजे हुए प्राणी की साफ़ तस्वीर देते हैं जो परमेश्वर के दिए हुए स्थान से ऊपर उठना चाहता था।

याद रखिए: शैतान परमेश्वर के बराबर नहीं है। मसीही विश्वास यह नहीं सिखाता कि परमेश्वर और शैतान दो बराबर शक्तियाँ हैं जो ब्रह्मांड के लिए लड़ रही हैं। परमेश्वर सृष्टिकर्ता है। शैतान एक सृजा हुआ प्राणी है, और उसकी शक्ति सीमित है।

उसके साथ क्या हुआ?

बाइबल घमंड, बगावत, और पापी स्वर्गदूतों के गिरने का वर्णन करती है। यीशु ने कहा, “मैं शैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था।” पतरस पाप करने वाले स्वर्गदूतों की बात करता है, और यहूदा उन स्वर्गदूतों की बात करता है जिन्होंने “अपनी पहिली अवस्था को स्थिर न रखा।” प्रकाशितवाक्य शैतान और उसके दूतों को परमेश्वर के उद्देश्यों के साथ संघर्ष में और अंत में गिराए जाते हुए दिखाता है।

“उस ने उन से कहा; मैं शैतान को बिजली की नाई स्वर्ग से गिरा हुआ देख रहा था।” — लूका 10:18 (HOV)

“क्योंकि जब परमेश्वर ने पाप करने वाले स्वर्गदूतों को न छोड़ा...” — 2 पतरस 2:4 (HOV)

“और जिन स्वर्गदूतों ने अपनी पहिली अवस्था को स्थिर न रखा...” — यहूदा 6 (HOV)

बाइबल हमें शैतान की बगावत की शुरुआत के बारे में वह हर ब्योरा नहीं देती जो हम चाहेंगे। हमें सावधान रहना चाहिए कि बाद की परंपराओं या अंदाज़ों को पवित्र शास्त्र न बना दें। सबसे ज़्यादा मायने यह रखता है जो बाइबल साफ़ बताती है: **शैतान ने परमेश्वर के विरुद्ध बगावत की, वह परमेश्वर के लोगों का विरोध करता है, और परमेश्वर ने उसका अंत पहले से तय कर दिया है।**

शैतान अब क्या करता है?

पवित्र शास्त्र में शैतान के तरीकों में **परखना, झूठ बोलना, धोखा देना, दोष लगाना, निराश करना, और लोगों को परमेश्वर पर भरोसे से दूर करने की कोशिश करना** शामिल हैं। यीशु ने उसे “झूठा, वरन झूठ का पिता” कहा। पतरस ने विश्वासियों को चेतावनी दी कि इब्लीस “गर्जनेवाले सिंह की नाई” इस खोज में घूमता है कि किसे फाड़ खाए।

“...वह झूठा है, वरन झूठ का पिता है।” — यूहन्ना 8:44 (HOV)

“सचेत हो, और जागते रहो; क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए।” — 1 पतरस 5:8 (HOV)

क्या शैतान परमेश्वर के सामने जाकर विश्वासियों पर दोष लगाता है?

अय्यूब की पुस्तक में शैतान परमेश्वर के सामने आता है और अय्यूब की विश्वासयोग्यता को चुनौती देता है। जकर्याह 3 में शैतान महायाजक यहोशू पर दोष लगाने के लिए खड़ा होता है। प्रकाशितवाक्य शैतान को “हमारे भाइयों पर दोष लगाने वाला” कहता है। ये अंश दिखाते हैं कि दोष लगाना उसके स्वभाव का हिस्सा है।

अय्यूब एक तसल्ली देने वाली बात भी सिखाता है: शैतान वह सब नहीं कर सकता था जो वह चाहता था। परमेश्वर नियंत्रण में बना रहा और सीमाएँ तय कीं। **हर समस्या, बीमारी, परीक्षा या कठिन समय के लिए अपने आप शैतान को दोष नहीं देना चाहिए।** हम एक गिरी हुई दुनिया में रहते हैं, हमारे अपने चुनावों के नतीजे होते हैं, दूसरे लोग भी चुनाव करते हैं, और पवित्र शास्त्र दिखाता है कि कठिनाइयों के एक से ज़्यादा कारण हो सकते हैं। पर जब दोष, परीक्षा या झूठ आएँ, तो मसीहियों से कहा गया है कि इब्लीस का सामना करें और परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य बने रहें।

“इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का साम्हना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।” — याकूब 4:7 (HOV)

आपको उससे डरना ज़रूरी नहीं

अगर आप यीशु मसीह के हैं, तो आपकी सुरक्षा इस पर नहीं टिकी कि आप शैतान से ज़्यादा ताकतवर या होशियार हैं। आपका भरोसा यीशु पर है। शैतान परख सकता है और दोष लगा सकता है, पर मसीह ने क्रूस पर जो किया उसे वह मिटा नहीं सकता।

“...क्योंकि जो तुम में है, वह उस से जो संसार में है, बड़ा है।” — 1 यूहन्ना 4:4 (HOV)

जब आप चूक जाएँ, तो शर्म के कारण यीशु से दूर मत भागिए। जो हुआ उसे मान लीजिए, उसकी क्षमा पाइए, फिर उठ खड़े होइए, और उसके पीछे चलते रहिए। शत्रु चाहता है कि शर्म आपको परमेश्वर से दूर धकेल दे। सुसमाचार आपको यीशु के पास वापस बुलाता है।

शैतान का अंतिम अंत क्या है?

शैतान का अंतिम ठिकाना अनिश्चित नहीं है। यीशु ने “उस अनन्त आग” की बात की जो “शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।” प्रकाशितवाक्य कहता है कि इब्लीस अंत में आग की झील में डाला जाएगा। शैतान नरक पर राजा की तरह राज्य नहीं करता; नरक उसके लिए न्याय है, उसकी जीत का राज्य नहीं।

“...हे श्रापित लोगो, मेरे साम्हने से उस अनन्त आग में चले जाओ, जो शैतान और उसके दूतों के लिये तैयार की गई है।” — मत्ती 25:41 (HOV)

“और उन का भरमाने वाला शैतान आग और गन्धक की उस झील में डाल दिया गया...” — प्रकाशितवाक्य 20:10 (HOV)

मसीही लोग आशा की जगह से आत्मिक बुराई के विरुद्ध खड़े हो सकते हैं। शत्रु की हार निश्चित है। यीशु प्रभु है।

परमेश्वर के सारे हथियार

परमेश्वर मसीहियों से आत्मिक बुराई से डर, अंधविश्वास, ताबीज़ों, या शारीरिक हिंसा से लड़ने को नहीं कहता। इफिसियों 6 विश्वासियों से कहता है कि **“परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो।”** ये हथियार उन आत्मिक सच्चाइयों और आदतों की तस्वीर हैं जो परमेश्वर हमें देता है ताकि हम दृढ़ खड़े रह सकें।

“परमेश्वर के सारे हथियार बान्ध लो कि तुम शैतान की युक्तियों के साम्हने खड़े रह सको।” — इफिसियों 6:11 (HOV)

1. सत्य का कमरबंद

इसका अर्थ: अपना जीवन उस पर बनाइए जो सच है, उन झूठों, डर, अफ़वाहों, या भावनाओं पर नहीं जो परमेश्वर के वचन के विपरीत हैं।

आप इसका इस्तेमाल कैसे करें: जानिए कि बाइबल असल में क्या कहती है। जब कोई विचार कहे, “परमेश्वर तुम्हें कभी क्षमा नहीं कर सकता,” तो उस झूठ की तुलना परमेश्वर के वादों से कीजिए। सच बोलिए। धोखे को ठुकराइए।

“इसलिये सत्य से अपनी कमर कसकर स्थिर रहो...” — इफिसियों 6:14 (HOV)

2. धार्मिकता की झिलम

इसका अर्थ: झिलम हृदय और ज़रूरी अंगों की रक्षा करती है। मसीही उस धार्मिकता में खड़े रहते हैं जो मसीह के द्वारा मिलती है, और उन्हें परमेश्वर के सामने सही तरीकों से जीने के लिए भी बुलाया गया है।

आप इसका इस्तेमाल कैसे करें: पाप के साथ समझौता मत कीजिए। जब आप चूक जाएँ, तो छिपने की बजाय उसे मान लीजिए और यीशु के पास लौट आइए। ईमानदारी, दया, पवित्रता, करुणा और आज्ञाकारिता चुनिए।

“...और धार्मिकता की झिलम पहिन कर;” — इफिसियों 6:14 (HOV)

3. शांति के सुसमाचार की तैयारी के जूते

इसका अर्थ: अच्छे जूते सैनिक को मज़बूत पकड़ देते हैं। यीशु की खुशखबरी आपको परमेश्वर के साथ शांति की नींव देती है और आपको वह खुशखबरी दूसरों तक पहुँचाने के लिए तैयार करती है।

आप इसका इस्तेमाल कैसे करें: याद रखिए कि यीशु ने आपके लिए क्या किया है। डर की बजाय आशा बाँटने के लिए तैयार रहिए। कठिन जगहों में यह जानकर जाइए कि आपकी शांति मसीह से आती है।

“और पांवों में मेल के सुसमाचार की तैयारी के जूते पहिन कर।” — इफिसियों 6:15 (HOV)

4. विश्वास की ढाल

इसका अर्थ: विश्वास परमेश्वर पर भरोसा है। पौलुस कहता है कि यह ढाल “उस दुष्ट के जलते हुए तीरों” को बुझा सकती है। वे तीर डर, परीक्षा, दोष, संदेह, या निराशा के रूप में आ सकते हैं।

आप इसका इस्तेमाल कैसे करें: जब आप न देख पाएँ कि परमेश्वर क्या कर रहा है, तब भी उसके स्वभाव और वादों पर भरोसा बनाए रखिए। विश्वास का मतलब यह दिखावा करना नहीं कि आपके कोई सवाल नहीं हैं; इसका मतलब है उन सवालों को परमेश्वर के पास लाना, न कि उसे छोड़ देना।

“और इन सब के साथ विश्वास की ढाल लेकर स्थिर रहो जिस से तुम उस दुष्ट के सब जलते हुए तीरों को बुझा सको।” — इफिसियों 6:16 (HOV)

5. उद्धार का टोप

इसका अर्थ: टोप सिर की रक्षा करता है। अपने उद्धार को याद रखना आपकी सोच को निराशा और दोष से बचाता है।

आप इसका इस्तेमाल कैसे करें: अपने आप को याद दिलाइए कि उद्धार यीशु मसीह पर टिका है, आपके दोषरहित होने की योग्यता पर नहीं। जब शत्रु कहे, “तुम चूक गए, इसलिए परमेश्वर तुमसे अब खत्म है,” तो सुसमाचार और परमेश्वर के वादों की ओर लौट जाइए।

“और उद्धार का टोप...” — इफिसियों 6:17 (HOV)

6. आत्मा की तलवार - परमेश्वर का वचन

इसका अर्थ: तलवार वह अकेला अंश है जिसे हथियार के रूप में बताया गया है। पौलुस इसे “परमेश्वर का वचन” बताता है। यीशु ने शैतान की परीक्षाओं का उत्तर पवित्र शास्त्र का सही उपयोग करके दिया।

आप इसका इस्तेमाल कैसे करें: बाइबल पढ़िए, उसे संदर्भ में समझिए, उसकी सच्चाइयाँ याद रखिए, और जब झूठ या परीक्षा आएँ तो उन्हें लागू कीजिए। पवित्र शास्त्र कोई जादुई मंत्र नहीं है; यह परमेश्वर का सत्य है जिसे मानना और जिसका पालन करना है।

“...और आत्मा की तलवार जो परमेश्वर का वचन है, ले लो।” — इफिसियों 6:17 (HOV)

7. प्रार्थना - परमेश्वर से संपर्क में रहिए

पौलुस तुरंत प्रार्थना की ओर बढ़ता है। प्रार्थना को हथियार के अलग हिस्से के रूप में नहीं दिखाया गया है, पर वह पूरी लड़ाई को घेरे रहती है। आप परमेश्वर के हथियार पहनकर फिर अकेले नहीं लड़ते।

आप इसका इस्तेमाल कैसे करें: दिन भर परमेश्वर से बात कीजिए। परीक्षा से पहले, परीक्षा के दौरान और चूकने के बाद मदद माँगिए। दूसरे विश्वासियों के लिए भी प्रार्थना कीजिए।

“और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और बिनती करते रहो...” — इफिसियों 6:18 (HOV)

हर सुबह हथियार बाँधने का एक सरल तरीका

आपको किसी रस्म या खास सूत्र की ज़रूरत नहीं। आप बस प्रार्थना कर सकते हैं:

यीशु, आज मुझे सत्य में चलने में मदद कीजिए।

जो सही है उसे चुनने में और यह याद रखने में मेरी मदद कीजिए कि मेरी धार्मिकता और उद्धार आप में हैं।

मुझे शांति दीजिए और अपनी खुशखबरी बाँटने के लिए मुझे तैयार कीजिए।

जब डर, संदेह, परीक्षा या दोष आए, तब आप पर भरोसा करने में मेरी मदद कीजिए।

उद्धार के सत्य से मेरे मन की रक्षा कीजिए।

मुझे अपना वचन सिखाइए और उसका सही उपयोग करने में मेरी मदद कीजिए।

मुझे प्रार्थना में अपने निकट रखिए। आज दृढ़ खड़े रहने में मेरी मदद कीजिए।

यीशु के नाम से, आमीन।

जब आपको परखा या दोषी ठहराया जाए

रुकिए। प्रार्थना कीजिए। यीशु को ठीक-ठीक बताइए कि क्या हो रहा है। अगर आप कोई ऐसा वचन जानते हैं जो इस हालात पर बोलता है, तो उसे धीरे-धीरे पढ़िए। अगर नहीं जानते, तो बाइबल खोलिए और किसी परिपक्व मसीही से ढूँढ़ने में मदद माँगिए। ऐसे हालात से खुद को दूर कीजिए जो पाप को आसान बनाते हैं। किसी और भरोसेमंद विश्वासी से अपने साथ प्रार्थना करने को कहिए।

अगर आप गिर जाएँ, तो **यह तय मत कीजिए कि आप निराश हैं।** अपना पाप मान लीजिए, परमेश्वर की क्षमा स्वीकार कीजिए, जो हुआ उससे सीखिए, और यीशु के पीछे चलते रहिए।

“यदि हम अपने पापों को मान लें, तो वह हमारे पापों को क्षमा करने और हमें सब अधर्म से शुद्ध करने में विश्वासयोग्य और धर्मी है।” — 1 यूहन्ना 1:9 (HOV)

प्रार्थना करना सीखें • उद्धार और क्षमा को दोबारा देखें • पूरी गाइड ऑफ़लाइन सहेजें

बाइबल की राह दिखाने वाला एक परवाह करने वाला अनाम मार्गदर्शक

अगर लाखों लोग गायब हो गए हैं — तो क्या हुआ होगा?

रैप्सर, महासंकट, और गायब हुए प्रियजनों के बारे में सांतवना की एक शांत, बाइबल पर आधारित व्याख्या।

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

रैप्सर क्या है?

रैप्सर मसीही विश्वास है कि यीशु विश्वासियों को अपने पास इकट्ठा करेगा। यह साइट उन बाइबल अंशों को समझाती है जिन पर यह विश्वास आधारित है।

अगर लाखों लोग अचानक गायब हो जाएँ तो मुझे क्या करना चाहिए?

पहले, जितना हो सके शांत और सुरक्षित रहिए। फिर जानिए कि बाइबल यीशु और उद्धार के बारे में क्या कहती है। आपको सब कुछ एक साथ समझना ज़रूरी नहीं।

क्या मैं रैप्सर के बाद भी मसीही बन सकता हूँ?

यह गाइड सिखाती है कि कोई व्यक्ति अब भी यीशु की ओर मुड़ सकता है, उस पर भरोसा कर सकता है, और उसके पीछे चल सकता है। बाइबल लोगों को बुलाती है कि जब तक मौका है, वे मसीह के पास आएँ।

सब लोगों के साथ अभी-अभी क्या हुआ?

अगर आप इसलिए खोज रहे हैं कि लोग अचानक गायब हो गए हैं, लाखों लोग गायब हो गए हैं, या आप पूछ रहे हैं “सब लोग कहाँ चले गए?”, तो हो सकता है आप मसीही शब्द रैप्सर पहली बार सुन रहे हों। यह पत्रा समझाता है कि बाइबल विश्वासियों के यीशु से मिलने के लिए उठा लिए जाने के बारे में क्या कहती है, जिसे मसीही लोग रैप्सर कहते हैं, और बाइबल क्या कहती है कि आगे क्या हो सकता है।

अगर आपका कोई प्रियजन गायब है, तो आशा मत छोड़िए और ऑनलाइन दिखने वाले हर डरावने दावे पर विश्वास मत कीजिए। जाँचिए कि असल में क्या हुआ है, बाइबल के अंश खुद पढ़िए, और सबसे ज़रूरी, जानिए कि यीशु कौन है और उद्धार कैसे पाएँ।

रैप्चर क्या है?

रैप्चर शब्द बहुत से मसीही 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18 में बताई गई घटना के लिए इस्तेमाल करते हैं। वह अंश कहता है कि मसीह में मरे हुए जी उठेंगे और जीवित विश्वासी उनके साथ बादलों पर “उठा लिए जाएँगे” ताकि हवा में प्रभु से मिलें।

1 कुरिन्थियों 15:51-53 कहता है कि विश्वासी अचानक बदल जाएँगे, “क्षण भर में, पलक मारते ही।” यूहन्ना 14:1-3 कहता है कि यीशु एक स्थान तैयार करेगा और फिर आकर अपने लोगों को अपने पास ले जाएगा।

अगर सचमुच बड़ी संख्या में लोग गायब हुए हैं: घटना को ध्यान से जाँचिए। फिर जो हुआ उसकी तुलना इन अंशों से कीजिए। यह मत मान लीजिए कि ऑनलाइन हर व्याख्या सच है।

महासंकट के दौरान क्या होता है?

महासंकट का मतलब है बहुत बड़ी परेशानी और दुख का समय। इस गाइड में “महासंकट” का मतलब वह भविष्य का समय है जिसका वर्णन दानियेल, मत्ती, 2 थिस्सलुनीकियों और प्रकाशितवाक्य में है, जब बुराई बढ़ती है, परमेश्वर संसार का न्याय करता है, और पशु बड़ी शक्ति पाता है।

प्रकाशितवाक्य 6-8: सात मुहरें—विजय, युद्ध, अकाल, मृत्यु, शहादत, और बड़ी उथल-पुथल।

प्रकाशितवाक्य 8-11: सात तुरहियों के न्याय और दो गवाह।

प्रकाशितवाक्य 12-13: तीव्र संघर्ष, पशु, झूठा भविष्यद्वक्ता, और छाप।

प्रकाशितवाक्य 15-16: सात कटोरों के न्याय।

प्रकाशितवाक्य 17-18: बाबुल और उसका न्याय।

प्रकाशितवाक्य 19: यीशु सामर्थ्य के साथ प्रत्यक्ष रूप से लौटता है।

प्रकाशितवाक्य 20: हजार वर्ष का राज्य, शैतान की अंतिम हार, और बड़े श्वेत सिंहासन का न्याय।

दानियेल 9:24-27 इस्राएल और यरूशलेम से जुड़े सत्तर “सप्ताहों” की बात करता है। यह गाइड अंतिम “सप्ताह” को सात वर्ष समझती है। प्रकाशितवाक्य 1,260 दिनों और 42 महीनों की भी बात करता है। सारे मसीही हर ब्योरे पर एकमत नहीं हैं, इसलिए बाइबल के अंश खुद पढ़िए।

अगर आपका बच्चा या प्रियजन गायब हो गया

अगर आप माँ, पिता, दादा-दादी, नाना-नानी, जीवनसाथी या परिवार के सदस्य हैं और बेचैनी से किसी अपने को ढूँढ़ रहे हैं, तो आप जो डर और खोने का दुख महसूस कर रहे होंगे, उसके लिए मुझे बहुत खेद है।

अगर किसी भी उम्र का कोई व्यक्ति लाखों अन्य लोगों के साथ एक ऐसी घटना में एक ही समय गायब हुआ जो सचमुच बाइबल के रैप्चर से मेल खाती है, तो इस गाइड की यह मान्यता कि रैप्चर महासंकट से पहले होता है, यह है कि वे यीशु के साथ सुरक्षित हैं।

इसमें शिशु, बच्चे, किशोर, वयस्क और बुजुर्ग सब शामिल हैं। कृपया अपने प्रियजन की कल्पना अकेले, डरे हुए, घायल या छोड़े हुए रूप में मत कीजिए। वे प्रभु के साथ हैं।

आपको उनकी इतनी याद आ सकती है जितनी शब्दों में कही नहीं जा सकती। पर अगर यह रैप्चर है, तो यह उनकी कहानी का अंत नहीं है—और आपकी कहानी का भी नहीं। मेरी आशा और प्रार्थना है कि आप भी यीशु को जानें और किसी दिन फिर मिलन हो।

1 थिस्सलुनीकियों 4:17: “और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।”

बाइबल हर उम्र के समूह का वर्णन करने वाला रैप्चर का कोई अलग वचन नहीं देती। यह सात्वना इस गाइड की उस मान्यता के भीतर कही गई है कि रैप्चर महासंकट से पहले होता है: जो रैप्चर में उठा लिए गए, वे मसीह के साथ हैं। यीशु ने छोटे बच्चों का स्वागत किया (मरकुस 10:14), और हम सारी पृथ्वी के न्यायी पर भरोसा कर सकते हैं कि वह सही करेगा (उत्पत्ति 18:25)।

पालतू जानवरों का क्या?

बाइबल सीधे यह वादा नहीं करती कि कोई खास पालतू जानवर फिर से जी उठेगा या रैप्चर में उठा लिया जाएगा। वह यह ज़रूर कहती है कि जानवर परमेश्वर की सृष्टि हैं और उसी के हैं। उत्पत्ति 1:20-25 और भजन संहिता 50:10-11 देखिए।

मत्ती 10:29: यीशु ने कहा कि पिता की इच्छा के बिना एक गौरैया भी ज़मीन पर नहीं गिरती। **लूका 12:6** कहता है कि परमेश्वर के सामने एक भी गौरैया भुलाई नहीं जाती।

रोमियों 8:19-22 कहता है कि सृष्टि स्वयं विनाश की दासता से छुड़ाए जाने की बाट जोह रही है। यशायाह 11:6-9 और यशायाह 65:25 मसीहा के शांतिपूर्ण राज्य में जानवरों की तस्वीर दिखाते हैं। हमारे पास आशा का कारण है, पर हमें पवित्र शास्त्र जितना कहता है उससे ज़्यादा का वादा नहीं करना चाहिए।

बाइबल की राह दिखाने वाला एक परवाह करने वाला अनाम मार्गदर्शक

बाइबल के अनुसार स्वर्ग कैसा है?

बाइबल अनंतकाल के बारे में गंभीरता से बात करती है, पर वह एक बहुत अनोखी आशा भी देती है। इस पत्रे का उद्देश्य आपको डराकर विश्वास कराना नहीं है। इसका उद्देश्य यह समझाना है कि पवित्र शास्त्र क्या सिखाता है, और ध्यान परमेश्वर के प्रेम, उसके निमंत्रण, और उस जीवन पर बनाए रखना है जो वह यीशु मसीह के द्वारा हमेशा अपने साथ देता है।

नए यरूशलेम, सोने की सड़कों, सुंदर पथरों, जीवन की नदी और परमेश्वर के साथ हमेशा रहने पर पवित्र शास्त्र पर आधारित प्रेम भरी नज़र।

स्वर्ग और नरक के बारे में बाइबल क्या कहती है?

बाइबल **स्वर्ग**, न्याय, परमेश्वर के साथ हमेशा के जीवन, और **नरक** के बारे में बात करती है। ये गंभीर विषय हैं, पर यह गाड़ आपको डराने के लिए नहीं है। इसका उद्देश्य आपको परमेश्वर के प्रेम, क्षमा, और **यीशु मसीह के द्वारा उद्धार पाने** की ओर इशारा करना है। यीशु ने कहा, “मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँचता।” — यूहन्ना 14:6 (HOV)

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

बाइबल के अनुसार स्वर्ग कैसा है?

बाइबल स्वर्ग को परमेश्वर के साथ जीवन बताती है, जहाँ बुराई, मृत्यु, शोक और पीड़ा हमेशा नहीं रहेंगे।

मैं कैसे जान सकता हूँ कि मैं स्वर्ग जाऊँगा?

स्वर्ग की मसीही आशा यीशु पर टिकी है, सिद्ध होने पर नहीं। क्षमा और उद्धार के लिए उस पर भरोसा कीजिए।

क्या मैं स्वर्ग में भी वही रहूँगा जो मैं हूँ?

बाइबल सिखाती है कि परमेश्वर अपने लोगों को जानता है और अनन्त जीवन उसके साथ असली जीवन है। कुछ बातें पूरी तरह समझाई नहीं गई हैं, इसलिए यह गाइड यह दिखावा नहीं करती कि सब कुछ जानती है।

क्या स्वर्ग सच में है? मैं स्वर्ग कैसे जा सकता हूँ?

अगर आप सोच रहे हैं कि **स्वर्ग कैसा है**, क्या स्वर्ग सच में है, मृत्यु के बाद क्या होता है, या कोई इंसान परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन कैसे पा सकता है, तो बाइबल हमें यीशु मसीह की ओर ले जाती है। स्वर्ग को परमेश्वर की उपस्थिति, जीवन, शांति और आशा के स्थान के रूप में बताया गया है, उनके लिए जो उसके अपने हैं।

बाइबल **नरक**, न्याय, पाप और परमेश्वर से अलगाव के बारे में भी गंभीरता से बात करती है। यह गाइड इन विषयों को आपको डराने के लिए नहीं उठाती। यह इन्हें इसलिए समझाती है क्योंकि बाइबल का **क्षमा, उद्धार, प्रेम और आशा** का संदेश मायने रखता है।

स्वर्ग और परमेश्वर का अनन्त राज्य कैसा होगा?

सबसे बड़ा वादा सोना या रत्न नहीं है। वह यह है: परमेश्वर के लोग हमेशा यीशु के साथ रहेंगे।

परमेश्वर अपने लोगों के बीच रहेगा। प्रकाशितवाक्य 21:3-4 कहता है कि परमेश्वर उनके साथ होगा, और फिर कोई मृत्यु, शोक, रोना या पीड़ा न होगी।

परमेश्वर की महिमा से भरा एक नगर। प्रकाशितवाक्य 21 नए यरूशलेम का वर्णन करता है जो परमेश्वर की महिमा से चमक रहा है। उसकी शहरपनाह यशब से जुड़ी बताई गई है, नगर साफ़ काँच जैसे चोखे सोने का है, और शहरपनाह की नींवें सुंदर पत्थरों से सजी हैं।

मोती के फाटक और सोने की सड़क। प्रकाशितवाक्य 21:21 कहता है कि बारह फाटक बारह मोती हैं और नगर की सड़क चोखे सोने की है, “पारदर्शी काँच के समान।”

नगर को रोशन करने के लिए सूरज की ज़रूरत नहीं। प्रकाशितवाक्य 21:23 कहता है कि नगर में चमकने के लिए सूरज या चाँद की ज़रूरत नहीं, क्योंकि परमेश्वर की महिमा उसे उजियाला देती है और मेमना उसका दीपक है। इसका मतलब यह कहना ज़रूरी नहीं कि सूरज खुद नहीं रहेगा; पवित्र शास्त्र कहता है कि नगर को उजियाले के लिए उसकी ज़रूरत नहीं।

जीवन के जल की नदी। प्रकाशितवाक्य 22:1 में जीवन के जल की एक शुद्ध नदी की तस्वीर है, जो बिल्लौर की तरह साफ़ है और परमेश्वर और मेमने के सिंहासन से निकलती है।

जीवन का वृक्ष। प्रकाशितवाक्य 22:2 जीवन के वृक्ष को नदी के किनारे बताता है और उसके फल और पत्तों की बात करता है।

कोई श्राप नहीं। परमेश्वर का मुख। कोई रात नहीं। प्रकाशितवाक्य 22:3-5 कहता है कि फिर कोई श्राप न होगा, परमेश्वर के सेवक उसकी सेवा करेंगे, वे उसका मुख देखेंगे, और प्रभु परमेश्वर उन्हें उजियाला देगा।

“और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।” — 1 थिस्सलुनीकियों 4:17 (HOV)

पवित्र शास्त्र मसीह के अपने लोगों के भविष्य को जीवन, सुंदरता, पवित्रता, आराधना, सेवा, परमेश्वर के लोगों के साथ रहने, और परमेश्वर की सीधी उपस्थिति के रूप में बताता है।

परमेश्वर ने जो अच्छा है उसे बनाया — अनन्त अलगाव का क्या अर्थ है

परमेश्वर आकाश, पृथ्वी, जीवन और हर अच्छे उपहार का सृष्टिकर्ता है। बाइबल एक अच्छी सृष्टि से शुरू होती है और इस पर खत्म होती है कि परमेश्वर अपने छुड़ाए हुए लोगों के साथ एक नई की हुई सृष्टि में रहता है।

सृष्टि परमेश्वर का काम थी और वह अच्छी थी। उत्पत्ति 1 कहता है कि परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी, उजियाला, ज़मीन, समुद्र, पौधे, जीव-जंतु और मनुष्य बनाए। उत्पत्ति 1:31 कहता है कि परमेश्वर ने जो कुछ बनाया था उसे देखा, “और देखो, वह बहुत ही अच्छा था।”

हर अच्छा उपहार परमेश्वर से आता है। याकूब 1:17 कहता है, “हर एक अच्छा दान और हर एक उत्तम देन ऊपर ही से है।” प्रेरितों के काम 17:25 कहता है कि परमेश्वर “जीवन, और श्वास, और सब कुछ” देता है।

छुड़ाए हुए लोग परमेश्वर के साथ जीवन के वारिस होते हैं। प्रकाशितवाक्य 21-22 बताता है कि परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहता है, नया यरूशलेम, जीवन की नदी, जीवन का वृक्ष, परमेश्वर का उजियाला, कोई श्राप नहीं, कोई मृत्यु नहीं, कोई शोक नहीं, कोई रोना नहीं, और कोई पीड़ा नहीं।

तो परमेश्वर से हमेशा के लिए अलग होने का क्या मतलब है?

अनन्त न्याय को परमेश्वर के साथ आशीषित जीवन के खो जाने के रूप में समझना उचित है – उसकी कृपा, उसका राज्य, उसकी सांत्वना, और वे अच्छी चीज़ें जो वह उन्हें देता है जिन्हें मसीह के द्वारा उसके पास लौटा लाया गया। जो कुछ सचमुच अच्छा है उसका स्रोत परमेश्वर है। इसलिए अनंतकाल का सबसे बड़ा खज़ाना नए यरूशलेम का सोना, रत्न, नदी या सुंदरता नहीं है। **सबसे बड़ा खज़ाना स्वयं परमेश्वर है: उसके लोग उसका मुख देखेंगे और हमेशा उसके साथ रहेंगे।**

जब मैं सृष्टि की हर सुंदर चीज़ के बारे में सोचता हूँ—उजियाला, पानी, जीवित प्राणी, रिश्ते, शांति, सांत्वना और स्वयं जीवन—तो मुझे याद आता है कि हर अच्छे उपहार का स्रोत परमेश्वर है। बाइबल अंतिम न्याय के हर भौतिक ब्योरे का वर्णन नहीं करती, पर वह परमेश्वर के साथ अनन्त जीवन और दूसरी मृत्यु के बीच का दिल तोड़ देने वाला अंतर ज़रूर दिखाती है। इसीलिए मैं चाहता हूँ कि आप जानें कि परमेश्वर आपको यीशु के द्वारा अपने साथ जीवन का न्योता दे रहा है।

नरक, अंतिम न्याय, और परमेश्वर से अनन्त अलगाव

मैं जानता हूँ कि यह पढ़ने में कठिन हिस्सा है। मैं केवल स्वर्ग के बारे में बात करना पसंद करता। पर अगर मुझे इसे पढ़ने वाले की परवाह है, तो मुझे यह भी बताना होगा कि यीशु ने अनंतकाल के बारे में क्या कहा—आपको शर्मिंदा करने या डराकर विश्वास का दिखावा कराने के लिए नहीं, बल्कि इसलिए कि आपका जीवन और आपका अनंतकाल मायने रखता है।

धनी मनुष्य और लाज़र — लूका 16:19-31

यीशु एक धनी मनुष्य और लाज़र नाम के एक गरीब की कहानी सुनाता है। मृत्यु के बाद लाज़र को सांत्वना मिलती है जबकि धनी मनुष्य पीड़ा में है। धनी मनुष्य होश में है, अपने जीवन और अपने भाइयों को याद करता है, राहत की लालसा करता है, और अपनी जीभ ठंडी करने के लिए पानी माँगता है। इब्राहीम उससे कहता है कि उनके बीच एक **“बड़ी खाई”** ठहराई गई है, जिसे पार नहीं किया जा सकता। तब धनी मनुष्य चाहता है कि उसके भाइयों को चेतावनी दी जाए।

इस अंश में मुझे सबसे ज़्यादा छू लेने वाली बात यह है कि धनी मनुष्य उन लोगों को याद करता है जिनसे वह प्रेम करता है और चाहता है कि उन्हें चेतावनी दी जाए। मैं ये वचन आपके साथ इसी कारण साझा कर रहा हूँ: मैं चाहता हूँ कि आप तब जान लें जब यीशु की ओर मुड़ने का समय अभी है। प्रकाशितवाक्य 20 अंतिम न्याय का वर्णन करता है, जब मृत्यु और अधोलोक आग की झील में डाले जाते हैं, जिसे दूसरी मृत्यु कहा गया है।

“परमेश्वर से अलग” होने का क्या मतलब है?

इसका मतलब यह नहीं कि परमेश्वर सर्वोच्च नहीं रहता या किसी तरह उस जगह को नहीं जान सकता। इसका मतलब है उस जीवन, सांत्वना और आशीष से बाहर कर दिया जाना जो परमेश्वर उन्हें देता है जिन्हें उसके पास लौटा लाया गया है। 2 थिस्सलुनीकियों 1:8-9 “प्रभु के सामने से, और उस की शक्ति के तेज से” दूर होकर अनन्त विनाश की बात करता है। मत्ती 25:46 अनन्त दण्ड की तुलना अनन्त जीवन से करता है। प्रकाशितवाक्य 20:11-15 अंतिम न्याय और आग की झील का वर्णन करता है।

पवित्र शास्त्र एक भयानक अंतर दिखाता है: छुड़ाए हुए लोग परमेश्वर की नई की हुई सृष्टि, जीवन की नदी और वृक्ष, उसका उजियाला, उसका राज्य, उसका मुख, और उसके लोगों के साथ जीवन के वारिस होते हैं; अंतिम न्याय परमेश्वर के साथ उस आशीषित जीवन से बाहर कर दिया जाना है।

शैतान नरक पर राज्य नहीं करता। मत्ती 25:41 कहता है कि अनन्त आग शैतान और उसके दूतों के लिए तैयार की गई है। प्रकाशितवाक्य 20:10 कहता है कि स्वयं शैतान का वहीं न्याय होता है।

कृपया यह जान लीजिए: परमेश्वर अब भी आपको मसीह के पास आने का न्योता दे रहा है।

“कि यदि तू अपने मुंह से यीशु को प्रभु जानकर अंगीकार करे, और अपने मन से विश्वास करे, कि परमेश्वर ने उसे मरे हुएओं में से जिलाया, तो तू निश्चय उद्धार पाएगा।” — **रोमियों 10:9 (HOV)**

उद्धार कैसे पाएँ, यह पढ़ें

बाइबल की भविष्यवाणी — प्रकाशितवाक्य और आगे क्या होगा

बाइबल की भविष्यवाणी भारी लग सकती है। यह सामग्री घबराहट पैदा करने या किसी फैसले के लिए आप पर दबाव डालने के लिए नहीं है। अंशों को ध्यान से पढ़िए, सवाल पूछिए, और याद रखिए कि केंद्रीय संदेश यह है कि परमेश्वर नियंत्रण में बना रहता है और यीशु आशा, क्षमा और परमेश्वर के साथ हमेशा का जीवन देता है।

प्रकाशितवाक्य, दानिय्येल, महासंकट, धोखे, पशु और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहने की एक सरल गाइड।

महासंकट के दौरान मैं धोखे से कैसे बच सकता हूँ?

यीशु अंतिम समय की अपनी शिक्षा इस चेतावनी से शुरू करता है, “सावधान रहो कि कोई तुम्हें न बहकाए” (मत्ती 24:4)। मत्ती 24:24 झूठे मसीहों और झूठे भविष्यद्वक्ताओं से सावधान करता है। 2 थिस्सलुनीकियों 2:8–12 और प्रकाशितवाक्य 13 भी शक्तिशाली धोखे के बारे में चेतावनी देते हैं।

प्रकाशितवाक्य 13 एक शक्तिशाली शासक का वर्णन करता है जिसे पशु कहा गया है, और एक और व्यक्ति का जिसे अक्सर झूठा भविष्यद्वक्ता कहा जाता है। प्रकाशितवाक्य 13 एक ऐसी छाप का भी वर्णन करता है जो खरीदने-बेचने से जुड़ी है। प्रकाशितवाक्य 14:9–12 इस छाप को पशु की आराधना और उसके प्रति निष्ठा से जोड़ता है।

ज़रूरी: बाइबल छाप को किसी अनजाने में हुई गलती के रूप में नहीं बताती। आसपास के बाइबल के संकेतों के बिना हर नई तकनीक, डिजिटल भुगतान व्यवस्था, पहचान पत्र, या राजनीतिक नेता को पशु या छाप मत कह दीजिए।

दानिय्येल और प्रकाशितवाक्य क्या कहते हैं? — एक सरल गाइड

दानिय्येल 2: पृथ्वी के राज्यों का क्रम और परमेश्वर का अंतिम राज्य। **दानिय्येल 7:** पशुओं के रूप में दिखाए गए राज्य और मनुष्य के पुत्र का आने वाला राज्य। **दानिय्येल 8:** बाद के राज्यों और एक ऐसे शासक के दर्शन जो अंतिम समय की बाइबल भविष्यवाणी में फिर दिखने वाले विषयों की झलक देता है। **दानिय्येल 9:** सत्तर सप्ताहों की बाइबल भविष्यवाणी। **दानिय्येल 10–12:** आत्मिक संघर्ष, अभूतपूर्व संकट का समय, मरे हुएों में से जी उठना, और 1,290 और 1,335 दिनों के उल्लेख।

प्रकाशितवाक्य 1–3: यीशु और कलीसियाएँ। **4–5:** परमेश्वर का सिंहासन और मेमना। **6–8:** मुहरें। **8–11:** तुरहियाँ और दो गवाह। **12–14:** अजगर, पशु, झूठा भविष्यद्वक्ता, यीशु के पीछे चलने के कारण चोट या सज़ा पाना, छाप, और धीरज। **15–16:** कटोरे। **17–18:** बाबुल। **19:** मसीह की दिखाई देने वाली वापसी। **20:** सहस्राब्दी, अंतिम बगावत और न्याय। **21–22:** नया आकाश, नई पृथ्वी, नया यरूशलेम, और अनन्त पुनर्स्थापना।

दानियेल और प्रकाशितवाक्य पढ़ते समय अपनी बाइबल खुली रखिए और अपना समय लीजिए। यह गाइड महासंकट से पहले की, भविष्य की ओर देखने वाली, सहस्राब्दी से पहले वाली समझ का पालन करती है। मसीही लोग बाइबल की भविष्यवाणी की हर बात पर एकमत नहीं हैं, इसलिए पवित्र शास्त्र को अपनी नींव बनने दीजिए। यहाँ रैघर की कोई तारीख तय नहीं की जा रही।

जब आपका दिल भारी हो, तब यहाँ आइए।

डर, चिंता और हिम्मत के लिए बाइबल के वचन

आपको यह दिखावा करना ज़रूरी नहीं कि आप डरे हुए नहीं हैं। परमेश्वर पहले से जानता है कि आप क्या महसूस कर रहे हैं। धीरे-धीरे पढ़िए। हो सकता है आज आपको केवल एक वचन चाहिए।

जब डर आपसे बड़ा लगे

डर एक इंसानी भावना है। एक घबराया हुआ पल आने का मतलब यह नहीं कि आप परमेश्वर के सामने असफल हुए। अपने डर को सच्चाई से उसके पास ले आइए।

भजन संहिता 56:3 (HOV)

“जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा।”

यशायाह 41:10 (HOV)

“मत डर, क्योंकि मैं तेरे संग हूँ, इधर उधर मत ताक, क्योंकि मैं तेरा परमेश्वर हूँ; मैं तुझे दृढ़ करूंगा और तेरी सहायता करूंगा, मैं तुझे अपने धर्ममय दहिने हाथ से सम्भाले रहूंगा।”

भजन संहिता 34:4 (HOV)

“मैं यहोवा के पास गया, तब उस ने मुझे उत्तर दिया, और मुझे पूरी रीति से निर्भय किया।”

जब आप चिंतित या परेशान हों

आप परमेश्वर को ठीक-ठीक बता सकते हैं कि आपको किस बात की चिंता है। प्रार्थना कोई प्रदर्शन नहीं है। वह इतनी सरल हो सकती है कि, “यीशु, मुझे डर लग रहा है। कृपया मेरी मदद कीजिए।”

फिलिप्पियों 4:6-7 (HOV)

“किसी भी बात की चिन्ता मत करो: परन्तु हर एक बात में तुम्हारे निवेदन, प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ परमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किए जाएं। तब परमेश्वर की शान्ति, जो सारी समझ से परे है, तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों को मसीह यीशु में सुरक्षित रखेगी।”

1 पतरस 5:7 (HOV)

“और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उस को तुम्हारा ध्यान है।”

मत्ती 6:34 (HOV)

“सो कल के लिये चिन्ता न करो, क्योंकि कल का दिन अपनी चिन्ता आप कर लेगा।”

जब आप अकेला महसूस करें

अकेलापन कठिन दिन को और भारी बना सकता है। पवित्र शास्त्र बार-बार याद दिलाता है कि परमेश्वर अपने लोगों को नहीं छोड़ता।

इब्रानियों 13:5 (HOV)

“मैं तुझे कभी न छोड़ूंगा, और न कभी तुझे त्यागूंगा।”

भजन संहिता 27:10 (HOV)

“मेरे माता पिता ने तो मुझे छोड़ दिया है, परन्तु यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।”

यूहन्ना 14:18 (HOV)

“मैं तुम्हें अनाथ न छोड़ूंगा, मैं तुम्हारे पास आता हूँ।”

जब आपको नींद न आए

अगर आपका मन दौड़ना बंद नहीं कर रहा, तो आपको आज रात अपना पूरा जीवन सुलझाना ज़रूरी नहीं है। गहरी साँस लीजिए, सरल प्रार्थना कीजिए, और एक वचन को काफ़ी होने दीजिए।

भजन संहिता 4:8 (HOV)

“मैं शान्ति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा; क्योंकि हे यहोवा, केवल तू ही मुझे बेखटके सुरक्षित रखता है।”

भजन संहिता 121:4 (HOV)

“सुन, इस्राएल का रक्षक, न ऊँघेगा, और न सोएगा।”

जब आप किसी को खोने के बाद दुखी हों

किसी को खोने का दुख विश्वास की कमी नहीं है। यीशु खुद रोया था। आपको किसी की याद आने, रोने, और अपना दुख परमेश्वर के पास लाने की अनुमति है।

यूहन्ना 11:35 (HOV)

“यीशु रोया।”

भजन संहिता 34:18 (HOV)

“यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है, और पिसे हुआँ का उद्धार करता है।”

प्रकाशितवाक्य 21:4 (HOV)

“और वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा; और इस के बाद मृत्यु न रहेगी, और न शोक, न विलाप, न पीड़ा रहेगी; पहिली बातें जाती रहीं।”

जब आप निराश या थके हुए हों

मत्ती 11:28 (HOV)

“हे सब परिश्रम करनेवालो और बोझ से दबे हुए लोगो, मेरे पास आओ; मैं तुम्हें विश्राम दूंगा।”

यशायाह 40:31 (HOV)

“परन्तु जो यहोवा की बात जोहते हैं, वे नया बल प्राप्त करते जाएंगे, वे उकाबों की नाई उड़ेंगे, वे दौड़ेंगे और श्रमित न होंगे, चलेंगे और थकित न होंगे।”

भजन संहिता 46:1 (HOV)

“परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।”

जब आपको समझ न आए कि क्या करें

अगला विश्वासयोग्य कदम उठाने से पहले आपको पूरा रास्ता देखना ज़रूरी नहीं है।

नीतिवचन 3:5-6 (HOV)

“तू अपने सम्पूर्ण मन से यहोवा पर भरोसा रखना, और अपनी समझ का सहारा न लेना। उसी को स्मरण करके सब काम करना, तब वह तेरे लिये सीधा मार्ग निकालेगा।”

याकूब 1:5 (HOV)

“पर यदि तुम में से किसी को बुद्धि की घटी हो, तो परमेश्वर से मांगे, जो बिना उलाहना दिए सब को उदारता से देता है; और उसको दी जाएगी।”

जब आपको शांति चाहिए

यूहन्ना 14:27 (HOV)

“मैं तुम्हें शान्ति दिए जाता हूं, अपनी शान्ति तुम्हें देता हूं; जैसे संसार देता है, मैं तुम्हें नहीं देता: तुम्हारा मन न घबराए और न डरे।”

भजन संहिता 23:4 (HOV)

“चाहे मैं घोर अन्धकारमय तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे संग रहता है।”

जब आपको याद रखना हो कि परमेश्वर आपसे प्रेम करता है

आपकी भावनाएँ घंटे-घंटे में बदल सकती हैं। परमेश्वर का प्रेम इससे नहीं नापा जाता कि आज का दिन आसान लग रहा है या नहीं।

रोमियों 8:38-39 (HOV)

“क्योंकि मैं निश्चय जानता हूँ, कि न मृत्यु, न जीवन, न स्वर्गदूत, न प्रधानताएं, न वर्तमान, न भविष्य, न सामर्थ, न ऊंचाई, न गहिराई, और न कोई और सृष्टि हमें परमेश्वर के प्रेम से, जो हमारे प्रभु मसीह यीशु में है, अलग कर सकेगी।”

रोमियों 5:8 (HOV)

“परन्तु परमेश्वर हम पर अपने प्रेम की भलाई इस रीति से प्रगट करता है, कि जब हम पापी ही थे तभी मसीह हमारे लिये मरा।”

आम सवाल

हो सकता है आप इनमें से किसी सवाल के बारे में सोच रहे हों। आगे बढ़ते रहने में मदद के लिए ये छोटे उत्तर हैं।

जब मुझे डर लगे तो बाइबल का कौन-सा वचन पढ़ूँ?

भजन संहिता 56:3 कहता है, “जिस समय मुझे डर लगेगा, मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा।” आप अपने डर को परमेश्वर से छिपाने के बजाय उसके पास ला सकते हैं।

जब मैं चिंतित महसूस करूँ तो क्या प्रार्थना करूँ?

आप बहुत सरल तरीके से प्रार्थना कर सकते हैं: “यीशु, मुझे डर लग रहा है। कृपया मेरे पास रहिए, साफ़ सोचने में मेरी मदद कीजिए, और अगले कदम के लिए मुझे शांति दीजिए।”

क्या डरने का मतलब है कि मेरा विश्वास कमज़ोर है?

नहीं। बाइबल के लोगों को भी डर लगा था। विश्वास का मतलब यह भी हो सकता है कि डरे होने पर भी आप परमेश्वर की ओर मुड़ें।

जब शब्द न मिलें तब एक सरल प्रार्थना

यीशु, मैं डरा हुआ हूँ और बोझ से दबा हूँ। आप पहले से जानते हैं कि क्या हो रहा है और मैं क्या महसूस कर रहा हूँ। कृपया मेरे पास रहिए। अगले कदम के लिए मुझे अच्छी समझ दीजिए, आज के लिए बल दीजिए, और इस पल के लिए शांति दीजिए। मुझे याद रखने में मदद कीजिए कि मुझसे प्रेम किया जाता है और मैं आपसे सच्चाई से बात कर सकता हूँ। आमीन।

प्रार्थना के सच्चे होने के लिए आपको तुरंत बेहतर महसूस करना ज़रूरी नहीं है। उनसे बात करते रहिए। एक-एक दिन, और कभी-कभी एक-एक घंटा, करके आगे बढ़ते रहिए।

और सांत्वना चाहिए? सांत्वना और आराधना के पन्ने पर और पवित्र शास्त्र, भजन और ऑफ़लाइन आराधना की मदद मौजूद है।

सांत्वना और आराधना प्रार्थना कैसे करें मदद को ऑफ़लाइन सहेजें

जब आप डरे हों, किसी को खोने के बाद दुखी हों, या अकेले हों

डर, किसी को खोने के बाद के दुख, अकेलेपन, उलझन और कठिन दिनों के लिए पवित्र शास्त्र और आराधना के सुझाव।

क्या आपको अभी जो आप महसूस कर रहे हैं, उसके लिए पवित्र शास्त्र चाहिए?

हमने एक आसानी से मिलने वाला पन्ना बनाया है जिसमें डर, चिंता, अकेलेपन, नींद न आने वाली रातों, किसी को खोने के बाद के दुख, निराशा, कठिन फैसलों, शांति और परमेश्वर के प्रेम को याद करने के लिए वचनों का पूरा पाठ है।

डर, चिंता और हिम्मत का पन्ना खोलें →

जब समझ न आए कि और क्या करें, तो आराधना कीजिए

ये वे गीत हैं जिन्हें मैं चाहूँगा कि अगर हो सके तो आपके पास बैठकर आपके साथ सुनूँ।

ऐसे पल आ सकते हैं जब आपको पता नहीं होता कि क्या प्रार्थना करें। आप डरे हुए, थके हुए, किसी को खोने के बाद दुखी, या बस बोझ से दबे हो सकते हैं। तब इन भजनों को अपना मन यीशु की ओर मोड़ने दीजिए। हो सके तो गाइए। रोना पड़े तो रो लीजिए। उनके पास आने से पहले आपको मज़बूत होना ज़रूरी नहीं है।

ज़रूरत पड़ने से पहले आराधना का संग्रह सहेज लीजिए। जब तक इंटरनेट है, पूरा आराधना संग्रह डाउनलोड कर लीजिए। एक कॉपी अपने फ़ोन या कंप्यूटर में और दूसरी अपनी 64 GB की USB ड्राइव में रख लीजिए, ताकि इंटरनेट न होने पर भी जब हिम्मत चाहिए तब आप सुन सकें।

अनुग्रह और उद्धार: Amazing Grace — How Sweet the Sound; Just As I Am, without One Plea; Rock of Ages, Cleft for Me; To God Be the Glory।

जब आपको एक मित्र चाहिए: What a Friend We Have in Jesus; I Am Trusting You, Lord Jesus।

जब आपको सांत्वना चाहिए: There Is a Balm in Gilead; Beautiful Savior।

मृतकों में से जी उठना और आशा: I Know that My Redeemer Lives।

जब आप परमेश्वर की स्तुति करना चाहें: Praise God, from Whom All Blessings Flow; We Praise You, O God, Our Redeemer।

आराधना पुस्तकालय खोलें

पूरा ऑफ़लाइन आराधना संग्रह डाउनलोड करें (~65 MB)

जब मैं डरा हुआ, चिंतित, किसी को खोने के बाद दुखी, या अकेला हूँ, तब बाइबल के कौन-से वचन पढ़ूँ?

डरे हुए हों: भजन संहिता 23; भजन संहिता 46; यशायाह 41:10; यूहन्ना 14:1-3।

अकेले या छोड़े हुए हों: इब्रानियों 13:5-6; भजन संहिता 27:10; रोमियों 8:38-39।

किसी को खोने के बाद दुखी हों: यूहन्ना 11:25-26; 1 थिस्सलुनीकियों 4:13-18; प्रकाशितवाक्य 21:1-5।

बोझ से दबे या चिंतित हों: फिलिप्पियों 4:6-7; मत्ती 6:25-34; 1 पतरस 5:7।

दोषी महसूस करते हों या डरते हों कि परमेश्वर आपको क्षमा नहीं करेगा: रोमियों 5:8; रोमियों 8:1; 1 यूहन्ना 1:9; यूहन्ना 6:37।

कमज़ोर या निराश हों: यशायाह 40:28-31; 2 कुरिन्थियों 12:9; भजन संहिता 121।

यीशु के पीछे चलने के कारण चोट, सज़ा या मृत्यु का सामना कर रहे हों: प्रकाशितवाक्य 12:11; प्रकाशितवाक्य 14:12-13; रोमियों 8:35-39।

धोखे से उलझन में हों: मत्ती 24:4, 24; 1 यूहन्ना 4:1; 2 थिस्सलुनीकियों 2; प्रकाशितवाक्य 13।

आपको याद रखना है कि अंत कैसे होता है: प्रकाशितवाक्य 19-22। यीशु मसीह जीतता है। बुराई हारती है। परमेश्वर सब कुछ नया कर देता है।

जब आपके आस-पास सब कुछ बदल जाए, तब भी परमेश्वर नहीं बदलता

आपके हालात और भावनाएँ बदल सकती हैं, पर परमेश्वर विश्वासयोग्य बना रहता है। “**यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एकसा है।**” — इब्रानियों 13:8 (HOV) अगर आपको लगे कि आप उनसे दूर हैं, तो आप उनकी ओर मुड़ सकते हैं। उनका स्वभाव नहीं बदला है, और आप अब भी उन्हें पुकार सकते हैं।

बाइबल की राह दिखाने वाला एक परवाह करने वाला अनाम मार्गदर्शक

जीवित रहना और आपातकालीन योजना

तुरंत सुरक्षा, भोजन, आपातकालीन सामान, पानी, दवा, साफ़-सफ़ाई, बिजली जाने, संपर्क और लंबे समय की आपातकालीन योजना के लिए जीवित रहने की व्यावहारिक मदद।

बड़े संकट में जीवित रहना और आपातकालीन योजना

अच्छी **आपातकालीन योजना** बुनियादी बातों से शुरू होती है: व्यक्तिगत सुरक्षा, साफ़ पानी, भोजन, ज़रूरी दवा, साफ़-सफ़ाई, संपर्क, आश्रय और भरोसेमंद जानकारी। यह **जीवित रहने** वाला हिस्सा इसलिए बनाया गया है कि आप अफ़वाहों या डर पर प्रतिक्रिया देने की बजाय इन प्राथमिकताओं के बारे में शांति से सोच सकें।

तुरंत के कदमों के लिए आपातकालीन गाइड का इस्तेमाल कीजिए, फिर समय के साथ व्यावहारिक सामान और एक ऑफ़लाइन जानकारी का पुस्तकालय बनाइए। यह सामान्य योजना की जानकारी है; जब मौजूदा आपातकालीन अधिकारी और योग्य चिकित्सा पेशेवर उपलब्ध हों, तो उनके निर्देशों का पालन कीजिए।

अगर समाज संकट में हो तो मुझे क्या करना चाहिए?

नया: आपातकालीन “यहाँ से शुरू करें” गाइड

तुरंत की प्राथमिकताओं के लिए कदम-दर-कदम आपातकालीन पन्ने का इस्तेमाल कीजिए: सुरक्षा, पानी, दवा, साफ़-सफ़ाई, भोजन, बिजली, संपर्क, बच्चे, बुजुर्ग और ऑफ़लाइन जानकारी।

आपातकालीन गाइड खोलें/आपातकालीन PDF डाउनलोड करें

शांत रहिए और कमज़ोर लोगों की मदद कीजिए। बच्चों, बुजुर्गों, विकलांग लोगों, और हर उस व्यक्ति की मदद कीजिए जो घायल या अकेला है।

बुनियादी बातों को प्राथमिकता दीजिए। सुरक्षित पीने का पानी, आश्रय, ज़रूरी दवा, साफ़-सफ़ाई, भोजन, प्राथमिक उपचार और संपर्क सबसे पहले आते हैं।

जानकारी ऑफ़लाइन रखिए। इस गाइड को प्रिंट कीजिए। एक छपी हुई बाइबल रखिए। PDF को एक से ज़्यादा USB ड्राइव या ऑफ़लाइन उपकरणों पर सहेजिए।

अपनी निजता की रक्षा कीजिए। ऑनलाइन गतिविधि हमेशा निजी नहीं होती। व्यक्तिगत जानकारी सावधानी से साझा कीजिए। अपनी सही जगह, सामान, पासवर्ड, या कमज़ोर लोगों की जानकारी सबके सामने मत डालिए।

एक भरोसेमंद समुदाय बनाइए। समझदारी से साझा कीजिए, दूसरों की मदद कीजिए, और डरे हुए लोगों का फ़ायदा मत उठाइए।

पवित्र शास्त्र पढ़ते रहिए। प्रार्थना कीजिए, दूसरों की मदद कीजिए, और यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहिए।

मुझे कौन-सा भोजन और ज़रूरी सामान जमा करना चाहिए?

उन खाद्य पदार्थों के आसपास योजना बनाइए जिन्हें आप पहले से खाते हैं और जो सुरक्षित रूप से जमा किए जा सकते हैं: सफ़ेद चावल, सूखी फलियाँ और दालें, जई, सूखा पास्ता, गेहूँ या गेहूँ के दाने, दूध का पाउडर, चीनी, नमक, शहद, डिब्बाबंद मांस या मछली, डिब्बाबंद फलियाँ, सब्ज़ियाँ और फल, नट बटर, लंबे समय तक टिकने वाली वसा, बुलियन, सूखे सूप, मसाले, चाय और कॉफ़ी। पैकेट पर तारीखों और हालत के अनुसार भोजन को बदलते रहिए। कभी भी फूले हुए, रिसते हुए, बुरी तरह जंग लगे, या क्षतिग्रस्त डिब्बों से मत खाइए।

ज़रूरी सामान में शामिल हैं: जमा किया हुआ सुरक्षित पानी, पीने के पानी को छानने या शुद्ध करने की व्यवस्था और उसका एक वैकल्पिक तरीका, हाथ से चलने वाला डिब्बा खोलने का औज़ार, बिना बिजली के खाना बनाने के औज़ार, प्राथमिक उपचार का सामान, कानूनी रूप से मिली निजी दवाएँ, स्वच्छता का सामान, मज़बूत कचरे के थैले, दस्ताने, बुनियादी हाथ के औज़ार, डक्ट टेप, रस्सी, तिरपाल, कंबल, मौसम के अनुसार कपड़े, कागज़ के नक्शे, छपे हुए निर्देश, नोटबुक, ज़रूरी रिकॉर्ड की कॉपियाँ, और आपके मौसम के अनुसार बाग़ के बीज।

समझदारी से जमा कीजिए: सामान को ठंडा, सूखा, साफ़, अँधेरे में और कीड़ों-चूहों से सुरक्षित रखिए। ज़रूरी सामान को बाँटकर रखिए ताकि एक रिसाव, आग, चोरी, या कीड़ों की समस्या से सब कुछ नष्ट न हो। अपनी सही जगह या सामान की सूची का सार्वजनिक रूप से प्रचार मत कीजिए।

आपातकालीन योजना और जीवित रहना

अगर कोई बड़ा गायब होना या व्यापक संकट आ चुका है, तो पहले तुरंत के खतरे से निपटिए—फिर धीमे होकर देखिए कि क्या हुआ, और यीशु की ओर मुड़िए।

आपातकालीन गाइड डाउनलोड / प्रिंट करें यीशु से मिलें

अगर आप अभी डरे हुए हैं

आपको सब कुछ एक साथ पढ़ना ज़रूरी नहीं है। अगर डर या चिंता के कारण सोचना मुश्किल हो रहा है, तो पवित्र शास्त्र के कुछ छोटे वचनों और एक सरल प्रार्थना से शुरू कीजिए।

डर और चिंता के लिए बाइबल के वचन →

अफ़वाहों के आधार पर जीवन-मृत्यु के फैसले मत लीजिए।

जब भी भरोसेमंद आपातकालीन निर्देश मिलें, उनका पालन कीजिए। यह पन्ना सामान्य योजना की जानकारी है, आपातकालीन सेवाओं या चिकित्सा देखभाल का विकल्प नहीं।

इसे अभी ऑफ़लाइन सहेज लीजिए।

इस गाइड की एक कागज़ की कॉपी, छपी हुई बाइबल, और एक ऑफ़लाइन कॉपी रखिए। किसी एक वेबसाइट या एक ही उपकरण पर निर्भर मत रहिए।

पहले 10 मिनट में मुझे क्या करना चाहिए?

1. तुरंत के खतरे से दूर हट जाइए: आग, क्षतिग्रस्त इमारतें, हिंसा, बाढ़ का पानी, गिरे हुए बिजली के तार, गैस रिसाव, या सड़क के खतरे।
2. अपने और अपने साथ के लोगों में गंभीर चोटें देखिए। अगर आपातकालीन सेवाएँ चालू हैं और ज़रूरत है, तो उन्हें बुलाइए।
3. बच्चों और कमज़ोर लोगों को किसी भरोसेमंद वयस्क के साथ रखिए।
4. केवल उत्तर ढूँढ़ने के लिए भीड़ या खतरनाक जगहों की ओर मत दौड़िए।
5. असल में क्या हुआ, यह जानने के लिए कई भरोसेमंद स्रोतों का उपयोग कीजिए। संकट के समय अफ़वाहों और झूठी खबरों की उम्मीद रखिए।

यीशु से शुरू कीजिए

संकट बाइबल की भविष्यवाणी को ज़रूरी महसूस करा सकता है, पर उद्धार पाना किसी समय-सारणी को सुलझाने से ज़्यादा ज़रूरी है। सुसमाचार वह खुशखबरी है कि यीशु मसीह हमारे पापों के लिए मरा, गाड़ा गया, और फिर जी उठा (1 कुरिन्थियों 15:3-4)। उद्धार परमेश्वर का उपहार है, अच्छे कामों से कमाई जाने वाली चीज़ नहीं (इफिसियों 2:8-9)। रोमियों 10:13 कहता है, “क्योंकि जो कोई प्रभु का नाम लेगा, वह उद्धार पाएगा।”

अगर आपको पता नहीं कि क्या प्रार्थना करें: परमेश्वर से सच्चाई से बात कीजिए। अपना पाप और उद्धारकर्ता की अपनी ज़रूरत मान लीजिए। अपनी भलाई पर नहीं, यीशु मसीह पर भरोसा रखिए—उसकी मृत्यु और मृतकों में से जी उठने पर। फिर यूहन्ना का सुसमाचार पढ़ना शुरू कीजिए।

जीवित रहने की प्राथमिकताएँ और आपातकालीन योजना

1. सुरक्षा और आश्रय

तुरंत के खतरे से बाहर निकलिए। खतरे के हिसाब से कोई ऐसी जगह चुनिए जो इमारत के लिहाज़ से सुरक्षित हो। जब आधिकारिक निकासी या शरण के निर्देश मिलें, तो उनका पालन कीजिए।

2. सुरक्षित पानी

जहाँ तक हो सके बोटलबंद पानी इस्तेमाल कीजिए। अगर पानी में कीटाणु हो सकते हैं, तो उबालना सबसे अच्छा उपचार है: साफ़ पानी को 1 मिनट तक खूब उबलने दीजिए, या 6,500 फ़ीट (लगभग 2,000 मीटर) से ऊपर 3 मिनट तक। उसे ठंडा होने दीजिए और साफ़ ढके हुए बर्तन में रखिए।

चेतावनी: अगर पानी में ईंधन, ज़हरीले रसायन या रेडियोधर्मी पदार्थ मिल गए हैं, तो उसे उबालने या आम तरीके से कीटाणुरहित करने से वह सुरक्षित नहीं होता।

3. दवा और प्राथमिक उपचार

ज़रूरी दवाएँ, चिकित्सा उपकरणों का सामान, दवाओं की लिखी हुई सूची, एलर्जी की जानकारी और आपातकालीन संपर्क एक साथ रखिए। गंभीर रक्तस्राव, साँस लेने में तकलीफ़, सीने में दर्द, गंभीर जलन, ज़हर, बड़ी चोट, या होश में बदलाव के लिए, जब संभव हो, पेशेवर आपातकालीन देखभाल चाहिए।

4. साफ़-सफ़ाई

पीने और खाने के लिए सुरक्षित पानी इस्तेमाल कीजिए। हाथ बार-बार धोइए। मल-मूत्र को पानी और भोजन से दूर रखिए। अगर सामान्य कचरा व्यवस्था बंद हो जाए, तो कचरे के थैले और बाँधने की डोरियाँ इस्तेमाल कीजिए, और जहाँ मिलें वहाँ स्थानीय जन-स्वास्थ्य निर्देशों का पालन कीजिए।

5. भोजन

जब फ्रिज चलने का भरोसा न हो, तो पहले वह खाना खाइए जो बिना फ्रिज के टिकता है। बिजली जाने पर फ्रिज और फ्रीज़र के दरवाज़े जितना हो सके बंद रखिए। जब खाने के सुरक्षित होने पर शक हो, तो गंभीर बीमारी का खतरा उठाने की बजाय उसे फेंक दीजिए।

6. बिजली और आग से सुरक्षा

टॉर्च या बैटरी वाली बत्तियाँ इस्तेमाल कीजिए। जनरेटर, ग्रिल, या ईंधन जलाने वाले कैंप के सामान को कभी घर, गैराज या किसी बंद जगह के अंदर मत चलाइए। कार्बन मोनोऑक्साइड बिना चेतावनी के जान ले सकती है।

7. संपर्क

हो सके तो बैटरी या हाथ से चलने वाला रेडियो रखिए। ज़रूरी फ़ोन नंबर और मिलने की जगहें कागज़ पर लिख लीजिए। फ़ोन की बैटरी बचाइए, और जब नेटवर्क पर बहुत बोझ हो तो टेक्स्ट संदेश भेजिए।

8. कमज़ोर लोग

शिशुओं, बच्चों, बुजुर्गों, विकलांगता वाले लोगों, चलने-फिरने की ज़रूरतों, चिकित्सा उपकरणों, संवेदी ज़रूरतों और पालतू जानवरों के लिए ठोस योजनाएँ बनाइए। यह मत मान लीजिए कि किसी और ने उन्हें देख लिया होगा।

मैं सुरक्षित पानी कैसे ढूँढ़ूँ और कैसे रखूँ?

कीटाणु और रसायन अलग-अलग समस्याएँ हैं। उबालना बीमारी फैलाने वाले कीटाणुओं को मारने के लिए बहुत अच्छा है, पर इससे हानिकारक रसायन या रेडियोधर्मी प्रदूषण दूर नहीं होता। अगर रसायन या रेडियोधर्मी प्रदूषण का शक हो, तो पानी का कोई दूसरा सुरक्षित स्रोत इस्तेमाल कीजिए और जन-स्वास्थ्य निर्देशों का पालन कीजिए।

पहले से जमा करने के लिए, CDC सलाह देता है कि हर व्यक्ति के लिए रोज़ कम से कम 1 गैलन (लगभग 3.8 लीटर) पानी, कम से कम 3 दिन के लिए रखिए; हो सके तो ज़्यादा, और बीमारी, गर्भावस्था, गर्मी और पालतू जानवरों के लिए अतिरिक्त।

ये बातें मत कीजिए

- संदिग्ध पानी को केवल इसलिए मत पीजिए कि वह साफ़ दिखता है।
- जनरेटर, कोयले की ग्रिल, या ईंधन से जलने वाला चूल्हा घर के अंदर मत चलाइए।
- वह खाना मत खाइए जो फ्रिज बंद होने से असुरक्षित हो गया है।
- सफ़ाई के रसायनों को आपस में मत मिलाइए, जब तक उत्पाद के निर्देश साफ़ तौर पर ऐसा करने को न कहें।
- अपनी सही जगह, पासवर्ड, कीमती सामान, या कमज़ोर लोगों की जानकारी सबके सामने मत डालिए।
- जब योग्य देखभाल या प्रामाणिक मार्गदर्शन मिल सकता हो, तब अनजान सोशल मीडिया पोस्टों के आधार पर चिकित्सा संबंधी फैसले मत लीजिए।
- डर के कारण किसी ऐसे के पीछे मत चल पड़िए जो खुद को मसीह बताता है। आत्मिक दावों को पवित्र शास्त्र से जाँचिए।

महासंकट के दौरान बाइबल की चेतावनी

इस साइट में अपनाई गई भविष्य की ओर देखने वाली मसीही समझ में, प्रकाशितवाक्य पशु, झूठे भविष्यद्वक्ता, धोखे, आराधना और छाप के बारे में चेतावनी देता है (प्रकाशितवाक्य 13-14)। बाइबल की चेतावनी आत्मिक निष्ठा के बारे में है—आसपास के बाइबल के संकेतों के बिना हर नई तकनीक, भुगतान व्यवस्था, पहचान पत्र, टीके या राजनीतिक नेता को छाप कह देने का कारण नहीं।

यीशु के प्रति विश्वासयोग्य बने रहिए। प्रकाशितवाक्य 13:7-18 और प्रकाशितवाक्य 14:9-12 खुद पढ़िए। पशु या उसकी मूरत की आराधना मत कीजिए, और वहाँ बताई गई छाप को ग्रहण मत कीजिए।

एक ऑफ़लाइन पुस्तकालय बनाइए

इन्हें ऐसी जगह रखिए जहाँ आप इंटरनेट के बिना भी पहुँच सकें:

- एक छपी हुई बाइबल।
- मुख्य Millions Missing? गाइड।
- यह आपातकालीन गाइड।
- दवाओं की सूची, आपातकालीन संपर्क, ज़रूरी पते और परिवार की मिलने की योजनाओं की कागज़ की कॉपियाँ।
- एक से ज़्यादा USB ड्राइव या उपकरणों पर ऑफ़लाइन कॉपियाँ।

आपातकालीन PDFमुख्य बाइबल गाइड PDF

यह गाइड क्या बता सकती है और क्या नहीं

यह साइट महासंकट से पहले की मसीही समझ प्रस्तुत करती है, पर यह रैप्चर (उठा लिया जाना) की कोई तारीख नहीं बताती और यह दावा नहीं करती कि हर संकट प्रकाशितवाक्य की पूर्ति है। घटनाओं को ध्यान से जाँचिए। बाइबल के दावों के लिए पवित्र शास्त्र ही अधिकार है; तकनीकी सुरक्षा और चिकित्सा फैसलों में, जब संभव हो, आपातकालीन एजेंसियों और योग्य पेशेवरों का मार्गदर्शन लीजिए।

आपातकालीन मार्गदर्शन अमेरिकी CDC और FEMA/Ready.gov की योजना संबंधी सलाह से संक्षेप में लिया गया है। तकनीकी सिफ़ारिशें बदल सकती हैं; जब स्थानीय अधिकारी उपलब्ध हों, तो उनके मौजूदा निर्देशों का पालन कीजिए।

Millions Missing? के होम पेज पर वापस जाएँ

कॉपी करना मुफ्त • प्रिंट करना मुफ्त • साझा करना मुफ्त • श्रेय देना ज़रूरी नहीं

MillionsMissingGuide.org

English • Español • Português • Français • العربية • Русский • Deutsch • বাংলা • Bahasa
Indonesia • 简体中文 • Kiswahili • Filipino • فارسی • Українська • اردو • 한국어 • Tiếng Việt •
Türkçe